RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

06 संकट में सकारात्मक सोच रखें, करें... राजयोग

03 दादी पहले से ही अपनी विदाई का इशारा देने लगी थीं: बीके हंसा

वर्ष 07 | अंक 05 | हिन्दी (मासिक) | मई 2020 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 9.50

भावपूर्ण

श्रद्धांजलि

स्व. राजयोगिनी दादी मां जानकी

(1 जनवरी 1916 - 27 मार्च 2020)

शांति और शक्ति की आवाज हमेशा के लिए हो गई खामोश

निर्मोही का पाठ पढ़ा भौतिक जगत को अलविदा कह गईं दुनिया की दादी

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका का 104 वर्ष की उम्र में देहावसान

महिला सशक्तिकरण में अमूल्य योगदान

आध्यात्म, समाज कल्याण और विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उनके अनगिनत श्रद्धालुओं के प्रति मेरी शोक-संवेदनाएं।

रामनाथ कोविंद, राष्ट्रपति, भारत

दादी नारी शक्ति की मिसाल थीं

ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रमुख मार्गदर्शक राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर शोक व्यक्त करता हूं और विश्व भर में उनके असंख्य अनुयायियों और ब्रह्माकुमारी परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। दादी नारी शक्ति की मिसाल थीं।

-वेंकैय्या नायडू, उपराष्ट्रपति, भारत

पथ प्रदर्शक बनीं रहेंगी दादी जानकी

नारी शक्ति की प्रेरणास्त्रोत दादी जानकी जी ने पूरे विश्व को शांति एवं सद्भाव की राह दिखाई है। उन्होंने विश्व को अपने आध्यात्मिक विचारों से दिशादर्शन किया है। भारतीय दर्शन, राजयोग एवं मानवीय मूल्यों के लिए उन्होंने जो कार्य किए हैं, वह हमारे लिए पथदर्शक बने रहेंगे।

-आचार्य देवव्रत, राज्यपाल, गुजरात

आध्यात्मिक प्राप्ति लिए किया जीवन समर्पित

दादी जानकी जी ने अपने जीवन को विवेक, आध्यात्मिक प्राप्ति और ध्यान के लिए समर्पित किया। मैं ब्रह्माकुमारीज संस्था के सदस्यों के लिए हार्दिक संवेदना प्रदान करता हूं।

-विश्वभूषण हरिचंद्रन, राज्यपाल

सच्चे मानवतावादी को खो दिया है

देश ने एक सच्चा सामाजिक कार्यकर्ता, एक आध्यात्मिक नेता और एक सच्चे मानवतावादी को खो दिया है, जिनके प्रशंसनीय कार्यों और ज्ञान के शब्दों ने कई लोगों को प्रोत्साहित किया। उनकी आत्मा को शाश्वत शांति मिले।

प्रो. जगदीश मुखी, राज्यपाल, मिजोरम

दिखाई विश्व शांति की राह

राजयोगिनी दादी जानकी जी ने पूरी दुनिया को आध्यात्म का संदेश दिया और विश्व शांति की राह दिखाई। उन्होंने नारी शक्ति के लिए दुनियाभर में काम किया।

-अनुसुईया उइके, राज्यपाल, छत्तीसगढ़

मानव जाति की सेवा में समर्पित था जीवन

राजयोगिनी दादी जानकी एक महान आध्यात्मिक नेता थीं, जिन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों, नैतिकता और भोजन की अच्छी आदतों का निर्माण किया। इन सभी योगदानों को और मानव जाति के लिए प्रदान की गई उनकी सेवाओं को हमेशा याद किया जाएगा।

-बंडारू दत्तात्रेय, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

मानव जाति की थी वह आध्यात्मिक संपत्ति

दादी जानकी मानव जाति के लिए एक मूल्यवान आध्यात्मिक संपत्ति थीं। वह एक प्रबुद्ध आत्मा थीं, जिसका मानव सभ्यता के लिए किया हुआ योगदान हमेशा के लिए स्मरण में रहेगा।

- गणेशी लाल, राज्यपाल, ओडिशा

स्वर्ग ने जोड़ा है देवदूत अपने साथ

दादी जानकी जी हमेशा अपने विपुल भाषणों के लिए याद की जाएंगी, जो समाज की आध्यात्मिक प्राप्ति, शिक्षा, सामाजिक कार्य, प्रेम, शांति और खुशी के प्रसार के उत्थान के लिए प्रेरित है। मनुष्य सृष्टि में वह एक बहुत ही सुंदर मणि थीं और दयालु हृदय की इंसान थीं। मैं दृढ़ता से यह कहती हूं कि स्वर्ग ने एक देवदूत को अपने साथ जोड़ लिया है। यह समस्त मानव जाति के लिए अपूरणीय क्षति है।

-द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल, झारखंड

एक श्रेष्ठ, पूजनीय, वंदनीय आध्यात्मिक नेता थीं

दादी जानकी जी एक श्रेष्ठ, पूजनीय, वंदनीय आध्यात्मिक नेता थीं, जिन्होंने कई वर्षों तक ब्रह्माकुमारी आंदोलन को महिला सशक्तीकरण, मानवता का कल्याण और विश्व शांति के लिए बहुत ही प्रभावी ढंग से चलाया। सादगी का एक अवतार, उनकी दिव्य उपस्थिति हमेशा मुझे प्रभावित करती रही। समाज के लिए दादी जानकी की आजीवन निस्वार्थ सेवा हमें आने वाले वर्षों तक प्रेरणादायी और मार्गदर्शक रहेगी।

लालकृष्ण आडवाणी, वरिष्ठ भाजपा नेता, गांधीनगर

प्यार और मानवता की प्रतीक थीं दादी

वह एक ऐसी शख्सियत थीं, जिसने सदा ही अपने जीवन में आध्यात्मिकता को प्रथम स्थान दिया। उच्च मानवीय गुणों को धारण किया और ब्रह्माकुमारीज़ और उनके साथ जुड़े हुए हर एक के अंदर नेतृत्व गुणों का विकास करने का प्रयास किया। वह प्यार और मानवता की प्रतीक थीं। न तो उनको उम्र हिला सकी और न ही समय। पवित्र और दिव्य दादी ने परलोकगमन किया है तो भी उनकी आत्मा सभी बहनों और भाइयों को आराम देगी और लगातार प्रकाशमयी रास्ता दिखाएगा। यह जैसे कि हर पल उनकी उपस्थिति महसूस करने जैसा है।

-दीपक मिश्रा, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

ऐसी थीं हमारी दादी

1916
में हैदराबाद सिंध प्रांत में जन्म

1970
में पहली बार आध्यात्म का संदेश लेकर पश्चिमी देशों की धरती पर रखा कदम

2007
में संस्थान के मुख्य प्रशासिका का प्रभार

100
देशों में ईश्वरीय संदेश से तोड़ी जाति धर्म की दीवारें

21
वर्ष की आयु में संस्थान से समर्पित रूप से जुड़ी

14
वर्ष तक की थी गुप्त योग-साधना

91
वर्ष की उम्र में नियुक्त की गईं थीं ब्रह्माकुमारीज़ की मुखिया

46,000
ब्रह्माकुमारी बहनों की अलौकिक मां का छूटा साथ

ब्रह्माकुमारीज़ की प्रमुख दादी जानकी जी ने समाज की सेवा पूरी लगन के साथ की। उन्होंने हमेशा दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश की। महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में उनके प्रयास उल्लेखनीय थे। उन्होंने समाज की सेवा में पूरा जीवन लगा दिया। इस दुःख की घड़ी में मेरे विचार उनके अनगिनत अनुयायियों के साथ हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री भारत सरकार

शिव आमंत्रण आबू रोड। शांति और शक्ति की आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई। आध्यात्म की प्रेरणापुंज, लाखों लोगों की आदर्श, योगशक्ति की मिसाल राजयोगिनी दादी मां जानकी हमेशा के लिए अलविदा कह गईं। उन्होंने 104 वर्ष की उम्र में 27 मार्च सुबह 2 बजे माउंट आबू के ग्लोबल अस्पताल में अंतिम सांस ली। दोपहर में शांतिवन परिसर में अंतिम संस्कार किया गया। लॉकडाउन के चलते देश-विदेश के लाखों भाई-बहनों ने अंतिम दर्शन यूट्यूब और टीवी के माध्यम से किए। साथ ही दादी के प्रति विशेष योग कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुखाग्नि संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर ने दी।

अविभाज्य भारत के हैदराबाद सिंध प्रांत में वर्ष 1916 में जन्मी दादी जानकी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। भक्ति भाव के संस्कार बचपन से ही मां-बाप से विरासत में मिले। उन्होंने लोगों को दुःख, दर्द, तकलीफ, जातिवाद और धर्म के बंधन में बंधे देख अल्पायु में ही समाज परिवर्तन का दृढ़ संकल्प किया। माता-पिता की सहमति से 21 वर्ष की आयु में आप ओम् मंडली (ब्रह्माकुमारीज़ का पहले यही नाम था) से जुड़ गईं। ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में 14 वर्ष तक गुप्त तपस्या की।

दादी पहली बार 60 साल की आयु में वर्ष 1970 में विदेशी जमीं पर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता का बीज रोपने के लिए निकलीं। सबसे पहले लंदन से आध्यात्म का बीजारोपण किया। यहां 1991 में कई एकड़ क्षेत्र में फैले ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस की स्थापना की। कारवां बढ़ता गया और यूरोप के देशों में आध्यात्म का शंखनाद हुआ। दादी ने अकेले ही 100 से अधिक देशों में आध्यात्म का संदेश पहुंचाया। उन्होंने वर्ष 1970 से 2007 तक 37 वर्ष विदेश में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2007 में संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के देहावसान के बाद आपने 27 अगस्त को ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका बनकर अंतिम सांस तक ईश्वरीय सेवा करती रहीं।

देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए। इसके अलावा दादी को देश-विदेश में मानव मात्र की सेवाओं के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अवार्ड से भी नवाजा गया। मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता में विश्वभर में सराहनीय योगदान देने पर दादीजी को वर्ष 2012 में गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन कीपर्स ऑफ विजडम की दादी जी सदस्य भी थीं। विश्व स्तर पर मानव आवास एवं पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के लिए यह संगठन कार्य करता है। दादी के सम्मान में वर्ष 1977 में लंदन में जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना की गई। दादी जानकी दुनिया की पहली ऐसी महिला थीं, जिन्हें सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था। अमेरिका के टेक्सास मेडिकल एवं साइंस इंस्टीट्यूट में वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण के बाद दादीजी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड वुमन से नवाजा था। उन्होंने योग से अपने को मन इतना संयमित, पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक बना लिया था कि वह जिस समय चाहें, जिस विचार या संकल्प पर और जितनी देर चाहें, स्थिर रह सकती थीं।

शिक्षाओं से भविष्य पीढीयां भी प्रेरित होगी

महिलाओं को सशक्त बनाने और लोगों के जीवन को समृद्ध बनाने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जायेगा। उनके उपदेशों को याद किया जाएगा। उनकी शिक्षाओं से भविष्य की पीढीयां प्रेरित होती रहेगी।

-रविशंकर प्रसाद, केन्द्रिय मंत्री, भारत सरकार

ऐसी आत्मा को ईश्वर अपने चरणों में दें स्थान

दादी जानकी जी असंख्य लोगों को जीने की राह दिखाई एवं दूसरों को कल्याण के अर्थ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए उनके कार्य हमेशा प्रेरणा देते रहेंगें।

-शिवराज सिंह चौहान, मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश सरकार

दादी का निधन मेरा व्यक्तिगत क्षति

महिलाओं को सशक्त बनाने और लोगों के जीवन को समृद्ध बनाने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जायेगा। उनके उपदेशों को याद किया जाएगा। उनकी शिक्षाओं से भविष्य की पीढीयां प्रेरित होती रहेगी।

-जेपी नड्डा, अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

दादी पहले से ही अपनी विदाई का इशारा देने लगी थीं : बीके हंसा

दादीजी नहीं चाहती थी कि उनके शरीर छोड़ने पर ज्यादा खर्च हो

अंतिम श्वांस तक नहीं रूके कदम, विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का है वर्ल्ड रिकार्ड

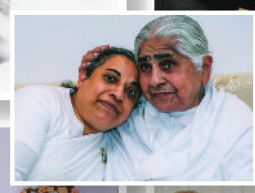

शिव आमंत्रण आबू रोड। दादी जानकी ने पहले से ही अपने शरीर छोड़ने की प्लानिंग कर ली थी। कई बार इसका जिक्र करती थीं कि वे चाहती हैं कि उनके शरीर छोड़ने के समय न तो कोई मेडिकल मशीनरी लगी हो और न ही किसी हास्पिटल में रहें। दादी जब 27 मार्च को इस दुनिया से विदा हुईं तो बिल्कुल वही स्थिति थी। दादी की इच्छा थी कि जब वे शरीर छोड़े तो ज्यादा तामझाम या ज्यादा खर्च या लोग इकटठे ना हों। यह बात वह कई बार सार्वजनिक रूप में भी करती थीं। वैसे तो उनकी तबियत 17 मार्च को ही अहमदाबाद में ज्यादा खराब हो गई। वहां से चिकित्सक छुट्टी नहीं दे रहे थे कि वे माउंट आबू लेकर आएं, लेकिन दादी का भाव और विचार था कि जल्दी माउंट आबू ले चलो। 18 मार्च को हम आबू आ गए।

यहां एक बारगी लगा कि दादी ठीक हो जाएंगी। उनके सपोर्टिंग सिस्टम को हटा दिया गया। केवल कभी-कभी आक्सीजन दी जाती थी। ऐसे में लगने लगा कि दादी अब पूरी तरह ठीक हो जाएंगी। शरीर छोड़ने के पहले घटना है। मुझसे हाथ मिलाया और भाकी पहनी। यह करीब रात 10 बजे की को बुलाया गया, इसके कुछ देर बाद दादी की तबीयत खराब होने लगी। चिकित्सकों लेकिन 27 मार्च सुबह 2 बजे वे इस दुनिया से विदा हो गईं।

जब वे अहमदाबाद में हास्पिटल में थीं, वहां के डॉक्टरों से हाल-चाल पूछती थीं। दादी संस्थान से जुड़े लोगों के लिए खुद ही संदेश लिखवाती थीं कि ये संदेश सभी भाई-बहनों व सेवाकेन्द्रों पर भेजा जाए। दादी शरीर में रहते हुए भी उपराम रहने लगी थीं। जैसे कि वे शरीर में हैं ही नहीं। इसलिए डाक्टरों से अपने बारे में खुद मुझसे ही हाल-चाल के लिए पूछने के लिए कहती थीं। दादी कुछ समय से कहती थी कि मेरा शरीर साथ नहीं देता। तुम ये मत समझना कि मैं अकेली हूं। मैं हमेशा तेरे साथ रहूंगी। परमात्मा चाहता है कि तुम भी तपस्या कर शक्तिशाली बनो। दादी जी की ईश्वरीय सेवाओं की शुरुआत पूना से ही हुई थी, अंतिम बार उनका जाना पूना ही हुआ था। 27 जनवरी को पूना गईं और वहां से आने के बाद उनकी तबीयत खराब रहने लगी थी।

(जैसा कि बीके हंसा ने बताया, वह 35 साल से दादी जानकी के साथ लंदन सेवाओं में उनकी निजी सचिव के रूप में सेवाएं करतीं रहीं।)

दादीजी द्वारा लिखी गईं पुस्तकें

- विंग्स ऑफ सोल, 1999 में प्रकाशित
- पर्ल्स ऑफ विजडम, हेल्थ कम्युनिकेशन द्वारा प्रकाशित
- कम्पेनिंस ऑफ गॉड, 1999 में बीके आईएस द्वारा प्रकाशित
- इनसाइड आउट, 2003 में प्रकाशित

2 बजे प्रातः अंतिम सांस 12 बजे पंचतत्व में विलीन

दादी जानकी ने 27 मार्च को प्रातः 2 बजे अंतिम सांस ली और 12 बजे शांतिवन के सम्मेलन सभागार ग्राउंड में अंतिम संस्कार कर दिया गया।

रग-रग में था सच्चाई, सफाई और ईमानदारी

दादी जानकी बाबा के नयनों के नूर थीं। सच्चाई सफाई और ईमानदारी उनके रग-रग में था। दादी बाबा को नहीं बल्कि बाबा दादी को याद करता था। दादी ने अपने जीवन का एक क्षण भी वेस्ट नहीं किया। अथक बन पुरे विश्व कि सेवा करती रही यहां तक कि अव्यक्त होने के कुछ महिनें पहले तक देश दुनियां का चक्कर लगाकर ईश्वरीय ज्ञान और अपनी शक्ति से सर्व आत्माओं की सेवा की।

-राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजस्थान

जनक मिसल परमात्मा अनुसार पार्ट निभाया

सदा हम सबों के लिए दादी जानकी जी प्रेरणा के स्त्रोत थी। वे अपने शांत और स्थिरचित्त जीवन से बहुत कुछ सबको सीखाया। परमात्मा शिव बाबा के अनुसार वे राजा जनक मिसल मोहजीत आत्मा बन कर अपना पार्ट निभाया। ब्रह्माकुमारीज़ की वो आधारस्तंभ रहीं।

-राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ माउंट आबू, राजस्थान

हमें उनसे मां जैसा स्नेह मिलता ही रहा

दादी जानकी जी हमेशा हमें मां की तरह अपने स्नेह के बंधन से बांधकर रखी। वह लाखों आत्माओं के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बन मां का रोल निभाया। वे सदा स्थिरचित और सशक्त बन इस बेहद के परिवार को चलाया।

-राजयोगी बीके निर्वैर, महासचिव ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजस्थान

बेहद की मिसाल बन लंबा रोल निभाया

104 वर्ष की उम्र में अपना शरीर का त्याग कर दादी बेहद की मिसाल बनकर गई। परमात्मा शिव बाबा की अति मीठी स्नेही प्यारी साथी बन कर हमेशा राईट हेन्ड पार्ट बजाया। ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना से लेकर अंत तक उनका रोल सबसे बेहद लंबा रहा।

-राजयोगी बीके बृजमोहन, अतिरिक्त महासचिव, माउंट आबू, राजस्थान

दुनियाभर में ज्ञान को किया प्रतिस्थापित

महिलाओं द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी अब हमारे बीच नहीं रहीं। उन्होंने दुनिया भर में भारतीय तत्वज्ञान, राजयोग और मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित किया। उनके असंख्य अनुयायियों के प्रति संवेदना।

-प्रणब मुखर्जी, पूर्व राष्ट्रपति, भारत

मानवता की सेवा को ईश्वरीय कार्य माना

मानवता, सादगी और करुणा की प्रतीक ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी ने मानवता की सेवा को ही ईश्वर कार्य मानकर जीवन का एक-एक क्षण उसके लिए अर्पित किया। उनके सभी अनुयायियों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।

-अमित शाह, गृहमंत्री, भारत सरकार

समाज सेवा में खपा दिया जीवन

दादी जानकी ने अपना सारा जीवन समाज की सेवा और उसके सशक्तिकरण के लिए खपा दिया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा की प्रेरणा देता है।

-राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री, भारत सरकार

प्रेरणादायक आध्यात्मिक नेता थीं

ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि। वह हमारे समय की सबसे प्रेरणादायक आध्यात्मिक नेताओं में से एक थीं। मेरे विचार उनके लाखों अनुयायियों के साथ हैं। ईश्वर उन्हें शक्ति दे।

-अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

करोड़ों जन को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित किया

अचल प्रतिबद्धता के साथ जनसेवा करते हुए ब्रह्माकुमारी की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी ने करोड़ों जन को अपने व्यक्तित्व-कृतित्व से प्रेरित किया है। उनके देवलोकगमन की सूचना भाव विह्वल करने वाली है। प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि वे उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उप्र सरकार

दूसरों का जीवन बदलने में हमेशा प्रयासरत

राजयोगिनी दादी जानकी पूरी लगन के साथ समाजसेवा में सदैव लगी रहीं। वो हमेशा दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयासरत रहीं। महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में उनका अहम योगदान है। आत्म शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

-नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार

पूरे समाज को आध्यात्म के रास्ते पर आगे बढ़ाया

आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन का समाचार दुखद है। दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान के माध्यम से पूरे समाज को आध्यात्म के रास्ते पर आगे बढ़ाने में अतुलनीय योगदान दिया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

-भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

बड़ी ही निष्ठा के साथ की समाजसेवा

उन्होंने बड़ी ही निष्ठा के साथ समाज की सेवा की और महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए अपना जीवन समर्पित किया। दादी जानकी ने पूरे विश्व में मन, आत्मा और बाहरी स्वच्छता के लिए बहुत योगदान दिया। स्वच्छता के बारे में उनकी चिंता को पहचान कर सरकार ने उन्हें स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर नियुक्त किया।

-वायएस जगनमोहन रेड्डी, मुख्यमंत्री, आंध्रप्रदेश

व्यक्तित्व समाज को सेवा देता रहेगा

दादी जानकी का व्यक्तित्व सम्पूर्ण मानव समाज को निस्वार्थ भाव से सेवा देता रहेगा। मैं ईश्वर से दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना करती हूं।

-वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

हमेशा मानवता की सेवा के लिए करेंगी प्रेरित

आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक दादी जानकी भौतिक रूप से हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन सनातन चेतना के माध्यम से हमारे मध्य हमेशा उपलब्ध रहेंगी। दादी जी द्वारा दिए गए प्रवचन, मानवता के मध्य प्रसारित की गई प्रेम और शान्ति की अपील हमें हमेशा मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

-अर्जुनराम मेघवाल, संसदीय मंत्री, भारत सरकार

स्वच्छता के लिए किया लोगों को प्रेरित

राजयोगिनी दादी जानकी का निधन देश के लिए बड़ी क्षति है। दादी ने स्वच्छ भारत मिशन के ब्रांड एंबेसेडर के रूप में देश में स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया।

-नितिन गडकरी, परिवहन एवं जहाज रानी मंत्री, भारत सरकार

प्रेरणापुंज

स्व. दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हर एक काम में परमात्मा की शक्ति काम करती है

शिव आमंत्रण आबू रोड। पारसनाथ का गायन है, बाबा ने आकर के हम बच्चों को पत्थर से पारस बनाया है। तो अपनी बुद्धि को देखें, हमारी बुद्धि आइरन एज से बदल करके, तमो रजो से बदल करके, सतोगुणी बन करके सतोप्रधान बन रही है? तो मनोबल से पहले हमारा मन हमारे हाथों में हैं? दूसरा मनोबल से जहाँ भी हम हैं सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ जो बाबा से मिली हैं वह यूज कर सकते हैं?

मनोबल नहीं है तो गुण, शक्तियां हमारी यूज नहीं हो रही हैं इसलिए हम सम्पन्न नहीं दिखाई पड़ते हैं। मिला है वह दिखाई नहीं पड़ता है। औरों को भी वह नजर नहीं आता है। अपने को भी फीलिंग नहीं आती है कि बाबा से इतना मुझे मिला है। मिला है तो हम सन्तुष्ट हैं। हमारे जैसा सन्तुष्ट कोई नहीं, मैं सन्तुष्ट हूँ। ऐसे नहीं मैं तो संतुष्ट हूं। परन्तु मेरे से भी सब संतुष्ट हो। और मुख्य बात है बाबा के तरफ से भी मुझे वाह वाह! मिले। बच्ची ठीक है! इससे इससे अन्दर दुआओं की शक्ति जमा होती है। फिर हर काम में बाबा की शक्ति काम करती है। तो मन बुद्धि में जैसे भगवान सकाश भर रहा है। तो मुख्य बात है पहले उसकी चंचलता को शांत करें। अगर अपने को बहुत बुद्धिमान समझते हैं तो मन चलता है, इन्टरफियर करता है। जैलषी वश, ईर्ष्या वश तेरा मेरा जो होता है उससे मन अशान्त हो जाता है, तो मन बलवान बने कैसे?

स्वभाव भी कोई अपना ऐसा है, वह भी मन की कमजोरी के कारण स्वभाव ऐसा है जो खुद को ही अन्दर से महसूस होता है कि अगर मेरा स्वभाव न होता तो बहुत पुरूषार्थ में आगे जाते, सफलता और अच्छी मिलती। तो इसके लिए एक छोटा-सा टोटका बुद्धि में रखते हैं कि दिमाग हमारा सदा ही ठण्डा हो, जल्दी गरम न हो जायें। किसी हालत में भी हमारा दिमाग गरम न हो। किसी के लिए भी घृणा न आये तो दिल खुश रहेगी। स्वभाव सरल होगा। दिमाग ठण्डा है तो दिल खुश है। दिल खुश है तो हमारे स्वभाव में सरलता है, मिठास है।

बाबा बार-बार कहते हैं- बच्चे मीठे बनो। मीठे तब बनेंगे जब मन बलवान है। अन्दर कोई भी कमजोरी चिड़चिड़ापन ले आती है। इसलिए बाबा हमेशा चाहते हैं हम रूहानियत में रहें, और अपने से भी और आपस में भी मीठी-मीठी रूह-रूहान करें। अगर आपस में रूहानी दृष्टि से मिलन नहीं मनाते हैं तो हमारे बोल में भी वो मीठास नहीं होता है।

अगर अशरीरी, विदेही, निराकारी बनने की मन में लगन है तो जो बाबा के बोल सुने वह हमारे जीवन में हों। अन्दर में रिहर्सल करें अशरीरी स्थिति फिर विदेही स्थिति.. पहले मैं अशरीरी आत्मा हूं, देह से फिर विदेही निराकारी, फिर अव्यक्त फरिश्ता आकारी.. अगर इसी तरह से हमने अपने आपको इस स्थिति में रखा तो मन मौज में आ जायेगा। मन खुश हो जायेगा। इसीलिए तो भटक रहा था बिचारा मन। इसलिए तो अशान्त हो रहा था, जो उसको वह खुराक नहीं थी -देह, सम्बन्ध, दुनिया में फंस गया था, अभी उसको छुड़ाया। मन को खुशी की खुराक खिलाओ तो खुश होता है। कहते हैं मन घोड़ा है और जो मन को सम्हालने वाले होते हैं उनको अक्ल होता है कि घोड़े को कैसे सम्भाला जाता है।

परमात्मा ने राजयोग सिखाकर सबकुछ फिट कर दिया...

राजयोग के प्रभाव से दिल का रोग ठीक होकर पुराने सफेद बाल भी हो रहे काले: दीपक शाह

व्यक्ति चाहे कैसा भी जटिल संस्कार वाला शरीरिक और मानसिक अस्वस्थ्यता के साथ जीवन क्यों न जी रहा हो अगर वह चाहे तो अपनी दुनिया बदल सकता है। इस घोर पापाचार बीमार युग कलियुग में भी अगर सुख-शांति पाना चाहें तो हमें अपने जीवन में सकारात्मकता को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि दुनियां में यही एक मात्र उपाय है जो हमें हर परिस्थिति में सही मार्ग की ओर अग्रसर करता है। इसी सीख को अपने जीवन में धारण करने वाले गोवा के दीपक शाह जो कि मरीन इंजीनियर ट्रेनर के साथ-साथ वहां के डायरेक्टर भी हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सिखाया गया राजयोग ने उनके जीवन के जीने का अंदाज ही बदल दिया है। उन्होनें अब अपने दिनचर्या में सकारात्मक बदलाव लाकर जीवन की अनेक पहेलियों को सुलझा लिया है।

शख्सियत

जानते हैं उनके इस सफर का सफलतम राज जो कि शिव आमंत्रण पत्रिका से बातचीत के दौरान बताया।

शिव आमंत्रण आबू रोड। मैं दीपक शाह गोवा का रहने वाला मरीन इंजीनियर हूं। डिप्टी डायरेक्टर इंस्टीट्यूट ऑफ मरीन टाईम स्टडीज में सेवारत हूं। हम लोग वहां पर मरीन इंजीनियर को एक साल के लिए ट्रेनिंग भी दिया करते हैं। मेरा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जा रहा पहला मेडिटेशन कैम्प केड प्रोग्राम अप्रैल 2019 में शामिल हुआ था। वहां पर मेरी मुलाकात डॉक्टर ब्रह्माकुमार सतीश गुप्ता जी से हुई। उसके बाद फिर जुलाई, सितम्बर माह 2019 में केड प्रोग्राम अटेंड किया था। पिछले एक साल से 100 प्रतिशत ब्रह्माकुमारीज़ के नॉलेज को फॉलो कर रहा हूँ।

ब्रह्माकुमारीज़ के कैड प्रोग्राम से सीखा मेडिटेशन और दिनचर्या

कैड का जो प्रोग्राम ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा होता है उसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राजयोग क्या है, इसे सही मायने में कैसे करते हैं, उससे हमें फायदे क्या-क्या हैं यह सब बातें सीखाते-बताते हैं। इस ज्ञान मार्ग में चलने के बाद मेरे जीवन में एक नया सवेरा आया। मुझे बताया गया कि सुबह से रात तक की दिनचर्या में हमें क्या-क्या करना है-जैसे कि प्रातः जल्दी उठ कर मेडिटेशन करना उसके बाद शारीरिक योगाभ्यास के साथ-साथ वाकिंग, फिर खाने में सात्विक भोजन खाना, जिसमें हाई आयरन, फाईबर युक्त भोजन को रोजाना शामिल करता हूं। इसकी वजह से मेरे हेल्थ में काफी सुधार हुआ है। मुझे लगता है कि मेरे हार्ट में जो प्रॉब्लम्स था वो काफी हद तक अच्छा हो रहा है।

लोग राजयोग पर पूरी तरह से यकीन कर सकें

मैं अपना अनुभव सबको बताना चहता हूं जिससे लोग राजयोग पर पूरी तरह से यकिन कर सकें। मेरा बहुत ट्रेनिंग का प्रस्तुतीकरण गोवा, मुंबई और कोचीन में होता रहता है। जहां कोरोनरी दिल के रोगी को मनोरंजन के साथ रोकथाम में स्लीप मेनेजमेंट और मेंटल इमपावरमेंट के ऊपर लेक्चर देकर लोगों को जागरूक करता हूं। लोगों को बताना है कि मैं सही समय में सोकर और जागकर दिनचर्या को फिट रखने में काफी सुधार हुआ है। जब राजयोग कैड प्रोग्राम मैंने अटेंड किया तब वहां बहुत सारी बातें बताई गयी, जैसे- बाहर का खाना, खाते-खाते टी.वी. देखना, अखबार पढ़ना ये सब बंद किया तब जाकर मेरे स्वास्थ्य में सुधार हुआ। जो मेरे पत्नी और मैं दोनों ने अपने जीवन में अपनाकर बहुत सुखी हूं।

हरी, वरी और करी के वजह से काफी परेशान रहता था

अपने जीवन में तीन बातों पर ध्यान देकर जीवन को आसान बना लिया है जो हरी, वरी और करी के वजह से काफी परेशान रहता था। यानि हरी मतलब हमेशा जल्दबाजी, वरी मतलब हमेशा चिंतित रहता था और करी मतलब जंक फूड जैसे बटाटा, पिज्जा बहुत खाया करता था। अपने भविष्य को सोच कर बहुत चिंतित रहता था। ऐसे कई कारणों से मैं बहुत बीमार हो गया था। दिल की बीमारी के साथ और कई बीमारी भी मेरे को था। जब से राजयोग सीखा उसके बाद थोड़ा बहुत टेंशन तो था ही फिर भी हम अपने ऊपर ध्यान रखते-रखते जीवन को अच्छी दिनचर्या में ढ़ालकर सुखद आनंमयी जीवन बना लिया हूं।

55 वर्ष के उम्र में भी पिछले 21 वर्ष से सफेद बाल काले होने लगे

सबसे आश्चर्य जनक बात यह है कि मेरे सफेद बाल, सफेद आईब्रो भी काला होता जा रहा है। जैसा कि डॉक्टर बताते हैं कि हमारे शरीर में 80000 बिलियन सेल्स होते हैं जो हर तीन माह से एक साल में चेंज होता रहता है। जिसके कारण मेरे शरीर में आश्चर्यजनक बदलाव हो रहा है। पिछले 21 साल से मेरे बाल और आईब्रो सफेद था उसे देखते हुए लोग पुंछ रहे हैं कि आप क्या कर रहे हैं जिसके वजह से यह बदलाव आ रहा है। मेरा वेट पहले 85 किलो था अब 60 किलो हो गया है। इसके लिए डाईड पर विशेष ध्यान दिया।

दिन में कम से कम 7 या 8 बार चाय पी ही लेता था

मैं काफी लेट उठने के आदत के साथ चाय का भी शिकार होकर पिछले पच्चास साल से पी रहा था। दिन में कम से कम 7 या 8 बार हो ही जाता था। एक दिन कैम्प से बाहर जा रहा था तब हमारे साथ वाले लोग देख रहे थे कि कब हम चाय पियेंगे परन्तु चाय को हाथ नहीं लगाया यह बात उसके लिए आश्चर्यजनक था क्योंकि डॉक्टर की चाय मना करने वाली बात मुझे ऐसा टच किया कि मेरे अंतर मन को छू लिया और मैनें उसी पल से संकल्प किया कि जो डॉक्टर के रूप में शायद परमात्मा ही मुझे बोल रहे हैं इसलिए जरुर फॉलो करुंगा। शायद यह बात फॉलो करके मैं एक उदाहरण मूर्त बन सकता हूँ।

सब कुछ अब परमात्मा को सौंप कर निश्चिंत हो चुका हूं

मैं अब अपने कार्य क्षेत्र पर एच ओ डी डायरेक्टर और मरीन इंजीनियर होने के नाते वहां कॉलेज के छात्र या छात्राओं को ट्रेनिंग देते हुए मेडिटेशन के लिए भी प्रेरित करता हूं। उन्हें अपनी दिनचर्या को सबसे पहले सुधार करवाने के लिए उत्साहित करता हूं शारीरिक योगा के साथ-साथ ध्यान मेडिटेशन के लिए भी सबको जागरूक करता रहता हूं। करीब-करीब अपने कार्यक्षेत्र पर सबको संतुष्ट कर पाता हूं। सबसे यही अपील करता हूं कि सभी नकारात्मक वृतीयों को त्याग कर सकारात्मक वृतियों को अपनायें तभी हम सब का कल्याण और समाज का कल्याण संभव है। अब मैं बिल्कुल टेंशन फ्री होकर औरों को तनावमुक्त करता रहता हूँ और सब कुछ अब परमात्मा को सौंप कर निश्चिंत हो चुका हूं।

अपने पति के अंदर गजब के बदलाव की गवाह हूं

मैं अंजली शाह एक मरीन इंजीनियर ट्रेनर की धर्मपत्नी होने के नाते उनके साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग क्लास ट्रेनिंग लेकर जीवन को बेहद अद्भुत तरीके से बदल पायी। उससे पहले एक टीचर के पद पर होते हुए भी नकारात्मकता से भरी जिंदगी जी रही थी। कोई भी काम सकारात्मक तरीके और दिनचर्या के साथ नहीं हो पा रहा था। अब मैं अपने कार्य क्षेत्र के साथ कई सामाजिक सेवाओं और कार्यो में निरंतर संलग्न रहती हूं।

मुझे याद है अपने पतिदेव के अंदर भी काफी आलस्य, अलबेलापन के साथ बीमारियों से ग्रसित देखी। लेकिन उनके दिनचर्या में बदलाव के साथ एक अनोखा परिवर्तन का गवाह भी मैं हूं कि उनमें गजब का शांति स्थिरता आ चुका है। संस्कार चाहे कैसा भी हो बदलाव संभव है। इसके लिए मैं परमात्मा पिता को कोटी-कोटी धन्यवाद ज्ञापन करना चाहती हूं।

संपादकीय

लॉकडाउन चुनौती या अवसर

आज पूरे विश्व में कोरोना नाम की महामारी ने सबको तबाह कर दिया है। जिसके बचाव के लिए अधिकतर देशों ने लॉक डाउन किया है। लॉक डाउन का मतलब घरों में रहकर ही इससे बचा जा सकता है। भारत सरकार ने भी 40 दिन का लॉक डाउन घोषित कर दिया। जिससे लोग घर में रहे और अपनी सुरक्षा इस खतरनाक बीमारी से कर सकें। वजह जो भी बना हो लेकिन हर किसी को अपने घर में ही रहना है। ना तो कोई सर्वेन्ट, ना कोई, ना शौक ना कोई स्पेशल च्वाईस रह गयी है। अर्थात समानता आ गयी है। घर में ही रहना है कई लोग इसे चुनौती मानते है तो कई लोग इसे एक अवसर के रूप में ले रहे हैं। चुनौती घर में रहने की और अवसर खुद को चार्ज करने की। वास्तव में देखा जाये तो प्रकृति और परमात्मा ने यह अवसर के रूप में दिया है ताकि हम खुद को आंतरिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से सशक्त कर सकें। अपने और अपने परिवार के लिए समय निकाल सकें। इसलिए हर किसी ने इसे अवसर के रूप में ही लिया होगा। क्योंकि यही एक समय है जब प्रकृति भी शुद्धता के साथ मन की शुद्धता का अवसर रहा है। ऐसे समय का उपयोग अपने बेहतरी के लिए करना ही खुद को सुरक्षित और स्वस्थ रखना है। बच्चे और बुजुर्गों के लिए और भी यादगार हो गया है। क्योंकि इनके लिए घरों में रहकर अपनी उर्जा का उपयोग करना है।

[मेरी कलम से]

रविशंकर प्रसाद
केन्द्रीय कानून मंत्री
भारत सरकार

डिजिटल इंडिया के माध्यम से हम देश के समावेशी विकास और आध्यात्मिक विकास में लगे हैं

शिव आमंत्रण

जब मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता था, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शाखा में जाता था। फिर मैं विद्यार्थी परिषद् में कॉलेज में शामिल हो गया और फिर बिहार में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सानिध्य में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का शौभाग्य मिला, जेल जाना पड़ा, लाठी खानी पड़ी, तो इससे एक बड़ी दृष्टी मिली। जब मैं पटना हाईकोर्ट में वकालत शुरू किया तब जो लोग गरीब, परेशान, जेलो में बंद होते हैं उन सभी को मदद करना, ये मेरे स्वभाव रहे हैं। तो इससे मेरे मन में वैल्युज़ बढ़े, फिर बाद में राजनीति में आया, तो कुछ बेसिक वैल्युज़ लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान, गरीबों के प्रति संवेदनशीलता होनी चाहिए, जब अटलजी के सरकार में गया तो उनसे और दृष्टिकोंण मिला। जब मोदी के सरकार में काम करने का अवसर मिला तो वो हमेंशा कहते है डिजिटली जुड़े रहो और फिजिंकली भी जुड़े रहो। ये जो समावेशी भारत की जो कल्पना है, ये आप तभी सोच सकते हैं जब आपकी सोंच में वंचितो के लिए, उपेक्षितों के लिए एक दर्द है। भारत सिर्फ मिट्टी का टुकड़ा नहीं हैं, भारत एक सनातन परम्परा का एक बहुत बड़ा वाहक देश है। जहां आध्यात्म, चेतना,

> आध्यात्म ही भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में ले जा सकता है।

बड़ी सोच, वसुधैव कुटुम्बकम्, ये जो पूरी सोच है ये भारत को विश्वगुरू बनाता है। ब्रह्माकुमारीज़ जो काम कर रही है उसका मैं बहुत स्वागत करता हूं। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने जो बहुत बड़ा काम शुरू किया उसे दादीयां आगे बढ़ा रही हैं और बहुत भाई बहन इसमें सहयोगी हैं। यही जो काम है भारत की पहचान है। विभिन्न प्रकारों से नव जागृति, नव चेतना, ध्यान, आत्मा का सशक्तिकरण, यही भारत की पहचान है, भारत के दर्शन का। ये जो प्रयास है सतत् होना चाहिए। भारत के संस्कार, भारत के संस्कृति में एक बात सीखाते हैं कि व्यक्ति निर्माण का कार्य होना चाहिए। व्यक्ति के जीवन में सादगी हो, मुल्यों के प्रति आकर्षण हो। आज के युग में टेक्नोलॉजी के साथ आध्यात्मिकता भी बहुत जरूरी है, और डिजिटल इंडिया के माध्यम से हम देश के समावेशी विकास की कोशिश में लगे हैं। आम हिन्दुस्तानी को टेक्नोलॉजी के माध्यम से मजबूत करना, उनको सेवायें मिले, ई हॉस्पिटल, ई पेमेन्ट, ई किसान ये सब चीजें को हम आगे बढ़ा रहे हैं। लेकिन हमेंशा एक बात का ध्यान रखें, टेक्नोलॉजी सशक्तिकरण तो बहुत जरूरी है लेकिन कोई भी व्यक्ति टेक्नोलॉजी सशक्तिकरण हो कर स्थायी विकास तबतक नहीं कर सकता जबतक चेतना का विकास न हो। ये है भारत की विशेषता। चेतना और टेक्नोलॉजी, आत्मा और बुद्धि इन दोनों के बीच में एक समागम होना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ का जो सिद्धांत है इस बात को आगे बढ़ा रहा है।

[आध्यात्म की नई उड़ान]

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

परमात्मा को चाहिए साफ दिलवाले सच्चा, ईमानदार और वफादार बच्चे

> अंग्रेजी में कहा जाता है ऑनेस्टी ईज दि बेस्ट पॉलिसी। एक परमात्म अव्यक्त वाणी है जिसमें ऑनस्टी पर परमात्मा ने कहा है तपस्या अर्थात ऑनेस्टी, तपस्या की परिभाषा में ऑनेस्टी को हरेक परिस्थिति में अपनाया जाना चाहिए।

कोई एक दुकानदार का ये नियम था कि वह सुबह ठीक आठ बजे अपने दुकान पर आता था, बहुत मेहनत और ईमानदारी से दिनभर कार्य करता था और रात को आठ बजे वापस घर जाता। वो अकेला दुकान चलाता था। अपने नियम अनुसार हर रोज दोपहर एक बजे भोजन करने घर जाता था। और आधे घण्टे के लिए जो भी ग्राहक हो उससे उसका निवेदन था कि आप आधे घण्टे के लिए दुकान संभालिए या दुकान में केवल बैठिये। बहुत समय से ऐसा चल रहा था। कुछ समय के बाद चोरों को ये पता चलता है और वो एक युक्ति करते हैं। चार चोर एक प्लैन बनाता है, उसमें एक चोर बराबर एक बजे उस दुकान में समान खरीदने जाता है। दुकानदार देखता है कि एक बज गया है। ग्राहक समझ कर उससे पूछता है कि आप यहाँ आधा घण्टा रूकेंगे? वो कहता है, बिल्कूल आगे सारी दुकान उस अपरिचित व्यक्ति को सौंप कर वह अपने घर निश्चिंत होकर चला जाता है।

ग्राहक बनकर आया ये चोर दुकान में रखी चीजों को देखने लगता है, उसकी सीट पर जाकर बैठता है। तब तक उसके तीन साथी भी आ जाते हैं। बहुत अच्छा मौका है, वे जल्दी-जल्दी समान बटोरने लगता है। उसे भी कहता है कि तुम भी जल्दी करो। परन्तु ये पहले आया हुआ चोर कहता है कि ये मैं नहीं कर सकता। बाकी तीन चोर कहता है कि ये क्या कह रहे हो तुम, क्या भुल गये हमने क्या प्लैनिंग की थी, क्या सोच के आये थे। वो कहता है उस व्यक्ति ने मुझपर विश्वास किया है और जब से इस दुकान में आया हूं पता नहीं यहाँ पर मुझे क्या हो गया है, जब से उसकी सीट पर बैठा, यहां के प्रकंपनों ने मेरे अन्दर कुछ परिवर्तन ला दिया है। मैं तुम्हें भी कुछ करने नहीं दूंगा, मैं भी कुछ गलत नहीं करूंगा और फिर झगड़ा हो जाता है, वो तीन चोर और इस एक चोर में। उसे समझाने की कोशिश करता है कि ये तुम क्या कर रहे हो। वो कहता है कि मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे क्या हो गया। जैसे ही उस सीट पर बैठा, पता नहीं वो व्यक्ति कौन है, परन्तु उसके ईमानदारी और सच्चाई के प्रकंपन मेरे अन्दर प्रविष्ट हो गये। और ये काम अब नहीं कर सकता। एक दूसरे पर हल्ला करता है। आवाज सुनकर आसपास के लोग और दुकानदार आ जाते हैं। तबतक दुकान का मालिक भी आ पहुंचता है। पहला चोर दुकानदार को सब कुछ साफ साफ बता देता है कि ऐसा हो गया। आया तो मैं भी था चोरी के इरादे से, पर पता नहीं यहां पर कौन सी चीज थी जिसने मुझे रोक दिया। फिर पुलिस आ जाती है और दुकान का मालिक पहले वाले चोर को छोड़ कर बाकी तीन चोरों को पुलिस के हवाले करते हैं। उस दुकान का जो मालिक है सोचता है मैं भी बुढ़ा हो गया हूँ, और मैं अपना सारा दुकान इस पहले वाले चोर के हवाले करके जा रहा हूं। क्योंकि इसमें वही है जो मुझमें है और वो जो गुण है वो है ईमानदारी, सच्चाई, सफाई, वफादारी।

क्या ऐसी ऑनेस्टी हमारे अन्दर आयी है? हमने किसी से कुछ कहा नहीं, कुछ बोला नहीं, परन्तु दिल इतना साफ है सच्चा है कि अपने आप उसका प्रभाव, दूसरों पर हो रहा है। मुरली महावाक्य में शब्द आता है सकाश दो, फरिश्ता रूप धारण करो, यहाँ जाओ वहाँ जाओ, पृथ्वी की परिक्रमा करो, दुःखी आत्माओं को सकाश दो, आशांत आत्माओं को सकाश दो, अतृप्त आत्माओं को सकाश दो। एक तो है जा-जा कर सकाश देना, एक दूसरी विधि भी है, जो किसी एक अव्यक्त वाणी में बाबा ने कहा था आत्मा को इतना स्वच्छ बना दो, ऐसा पवित्र बना दो कि आत्मा कांच की तरह बन जाए, और फिर जैसे ही परमात्म किरणें उस कांच पर पड़ेगी, अपने आप सकाश जहाँ जाना है चली जाएगी। तुमको कहीं जाने की आवश्यकता नहीं होगी। सोचना भी नहीं पड़ेगा कि इसको दूं या उसको दूं। ज्ञान सूर्य की किरणें जैसे उस स्वच्छ कांच पर पड़ेगी, जहां जिसको आवश्यकता है वहां अपने आप पहुंचेगी। क्या अपनी आत्मा इतनी स्वच्छ हो गयी है ? अपने आप से पूंछें और बदलें।

बोध कथा
जीवन की सीख

लॉकडाऊन से मिली असीम शांति

महान लेखक टालस्टाय की एक कहानी है -शर्त। इस कहानी में दो मित्रों के आपस में शर्त लगती है कि यदि उसने 1 माह एकांत में बिना किसी से मिले, बातचीत किये एक कमरे में बिता देता है तो उसे 10 लाख नकद वो देगा। इस बीच यदि वो शर्त पूरी नहीं करता तो वो हार जाएगा। पहला मित्र ये शर्त स्वीकार कर लेता है। उसे दूर एक खाली मकान में बंद करके रख दिया जाता है। बस थोड़ा-सा भोजन और कुछ किताबें उसे दी गई। उसने जब वहां अकेले रहना शुरू किया तो1 दिन 2 दिन किताबों से मन बहल गया फिर वो खीझने लगा। उसे बताया गया था कि थोड़ा भी बर्दाश्त से बाहर हो तो वो घण्टी बजा के संकेत दे सकता है और उसे वहां से निकाल लिया जाएगा। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे उसे एक-एक घण्टे युगों से लगने लगे। वो चीखता-चिल्लाता लेकिन शर्त का ख्याल कर बाहर किसी को नहीं बुलाता। वह अपने बाल नोचता, रोता, गालियां देता, तडप जाता, मतलब अकेलेपन की पीड़ा उसे भयानक लगने लगी। परंतु वो शर्त की याद कर अपने को रोक लेता। कुछ दिन बीता धीरे-धीरे उसके भीतर एक अजीब शांति घटित होने लगी। अब उसे किसी की आवश्यकता का अनुभव नहीं होने लगा। वह बस मौन बैठा रहता। एकदम शांत उसका चीखना-चिल्लाना बंद हो गया।

इधर उसके दोस्त को चिंता होने लगी कि एक माह के दिन पर दिन बीत रहे हैं पर उसका दोस्त है कि बाहर ही नहीं आ रहा है। माह के अब अंतिम 2 दिन शेष थे, इधर उस दोस्त का व्यापार चौपट हो गया वो दिवालिया हो गया। उसे अब चिंता होने लगी कि यदि उसके मित्र ने शर्त जीत ली तो इतने पैसे वो उसे कहाँ से देगा। वो उसे गोली मारने की योजना बनाता है और उसे मारने के लिये जाता है। जब वो वहां पहुँचता है तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वो दोस्त शर्त के एक माह के ठीक एक दिन पहले वहां से चला जाता है और एक खत अपने दोस्त के नाम छोड़ जाता है। खत में लिखा होता है-प्यारे दोस्त इन एक महीनों में मैंने वो चीज पा ली है जिसका कोई मोल नहीं चुका सकता। मैंने अकेले में रहकर असीम शांति का सुख पा लिया है और मैं ये भी जान चुका हूं कि जितनी जरूरतें हमारी कम होती जाती हैं उतना हमें असीम आनंद और शांति मिलती है। मैंने इन दिनों परमात्मा के असीम प्यार को जान लिया है। इसीलिए मैं अपनी ओर से यह शर्त तोड़ रहा हूँ अब मुझे तुम्हारे शर्त के पैसे की कोई जरूरत नहीं है।

संदेशः इस उद्धरण से समझें कि लॉकडाउन के इस परीक्षा की घड़ी में खुद को झुंझलाहट, चिंता और भय में न डालें, उस परमात्मा की निकटता को महसूस करें और जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न कीजिये, इसमें भी कोई अच्छाई होगी यह मानकर सब कुछ भगवान को समर्पण कर दें। विश्वास मानिए अच्छा ही होगा। लॉकडाउन का पालन करें। स्वयं सुरक्षित रहें, परिवार, समाज और राष्ट्र को सुरक्षित रखें। लॉक डाउन के बाद स्वयं, परिवार और देश की गिरती अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए जी तोड़ मेहनत करना है।

प्रेरक विचार
Spiritual THOUGHTS

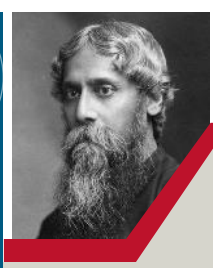

रवीन्द्रनाथ टैगोर
लेखक, नोबोल पुरस्कार विजेता

"आइए हम यह प्रार्थना न करें कि हमारे ऊपर खतरे ना आएं, बल्कि यह प्रार्थना करें कि हम उसका निडरता से सामना कर सकें।"

महाराणा प्रताप
मेवाड़ के राजा

"कोई भी संकट जीवन को मजबूत और अनुभवी बनाते हैं, इनसे डरना नहीं, बल्कि प्रसन्नता पूर्वक इससे जूझना चाहिए।"

[बी.के. शिवानी]
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन
गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

संकट में सकारात्मक सोच रखें, करें... राजयोग

आज कल लोग कोरोना संक्रमण के वजह से जो तनाव और भय का माहौल बना रहें हैं उससे बाहर निकलने का एक ही रास्ता है हर परिस्थिति में सकारात्मक रहना।

शिव आमंत्रण आबू रोड। जीवन में बहुत सारी ऐसी चीजें हैं, जिसे हम अच्छी तरह से समझते हैं। ये समाज अगर बेहतर है तो रास्ते आसान हो जाते हैं। जब चीजें अनजान होती है तो मुश्किलें हमारा सामना करती हैं। ऐसी ही मुश्किल घड़ियों में करना क्या है ये जानना बहुत जरूरी होता है। पिछले कुछ दिनों से जो कुछ भी हम अपने आस-पास देख रहे हैं वो कुछ ऐसी ही मुश्किलें हैं। जहां पर हम जानते नहीं हैं कि हमें करना क्या है। अक्सर बीमारी अकेली नहीं होती है। बीमारी के साथ मृत्यु और मृत्यु के साथ भय होता है।

हमारे साथ ऐसा नहीं होगा

आज हमारे आसपास डर का माहौल हावी होता जा रहा है। ऐसे समय पर हमें क्या करना चाहिए इसे हम जानने की कोशिश करते हैं। पिछले कुछ दिनों से अचानक की बातें सामने आई है। जीवन में कुछ बातें ऐसी होती है, जो हमें पता होती है। जीवन में कुछ बातें ऐसी होती है जो हमें अच्छी नहीं लगती हैं, जैसे किसी की मौत, किसी का एक्सीडेंट होना, किसी की नौकरी छूटना या किसी का रिश्ता टूटना। तो भी हम फील करते हैं कि ये हमारे साथ नहीं होगा। फिर अचानक हमारे जीवन में कोई ऐसी बात आती है तो हम उसका सामना नहीं कर पाते।

पूरे विश्व को किया प्रभावित

आप काम के लिए घर से निकलते हैं। आपको पता है, ट्रैफिक होता है। ट्रैफिक जाम होना एक वास्तविकता है। तो भी हम उसमें अटकते हैं। मतलब कि जो परिस्थिति हमें पता है और हमारे जीवन में रोज होती है तो भी हम उसमें परेशान होते हैं। अब एक ऐसी परिस्थिति आ गई है, जिसके बारे में हमें पता ही नहीं था। हमें ये नहीं पता कि उसे ठीक कैसे करना है। यह शायद पहली घटना है जिसने एक ही समय पर पूरे विश्व को प्रभावित किया है। पहले शायद ही कभी कोई ऐसी चीज हुई हो जो पूरे विश्व को एक ही समय पर प्रभावित कर रही है। हमारे मन पर इसका काफी असर हुआ है।

सब बाहरी और मन की स्थिति भीतरी है

आज हमें जीवन की हर बात घटना के लिए संकल्प करना है। पहले ट्रैफिक जाम था, आज वायरस है। दोनों चीजें परिस्थिति हैं। ये परिस्थितियां हमारे बाहर है और मन की स्थिति भीतरी है। जो समीकरण हम जीवन में बहुत सालों से लेकर चल रहे हैं, उसकी वजह से ये चिंता और डर बढ़ा हुआ है। वो समीकरण था कि जैसी परिस्थिति होगी, वैसी मन की स्थिति होगी। जब इतनी बड़ी समस्या है तो परेशान होना सामान्य है। तनाव होना भी सामान्य है। डर पैदा करना भी सामान्य है। तो हमने नकारात्मक भावनाओं को सामान्य कह दिया। ऐसे करते-करते हम शायद बचपन से जी रहे हैं और शायद विश्व के सारे लोग इसी विश्वास के साथ जी रहे हैं।

मन की स्थिति का प्रभाव परिस्थिति पर पड़ता

कोरोना वायरस की परिस्थिति में शांत रहना, स्थिर रहना, निडर रहना, निर्भय रहना जरूरी है। आज उस समीकरण को फिर से चेक करने की आवश्यकता है। परिस्थिति बाहर है, मन की स्थिति मेरी है। परिस्थितियां मन की स्थिति को नहीं बनाती। मन की स्थिति का प्रभाव परिस्थिति पर सौ प्रतिशत पड़ता है। जैसे इतने दिनों से हम सीख रहे हैं कि इस वायरस से अपने परिवार को, देश को और विश्व को बचाने के लिए हमें क्या-क्या करना है। सुनकर, समझकर हम सबने करना शुरू कर दिया। लेकिन, हमने यह नहीं सोचा कि इससे खुद को बचाने के लिए, सबको बचाने के लिए अपने मन के अंदर क्या करना है। हमने सोचा कि वायरस स्वास्थ्य पर असर होगा, बीमारी होगी और मौत भी हो सकती है। हम यह सोच रहे हैं अगर हम किसी से मिलें तो हमें पता होना चाहिए कि इनको तो संक्रमण नहीं है। अगर इनको है तो मैं इनके एक-दो फीट की दूरी में आ गई तो मुझे भी हो सकता है।

डर हमारे इम्युनिटी सिस्टम पर प्रभाव डालता

हम यह पता करें कि हम जिनसे भी मिल रहे हैं, उनको डर तो नहीं है। अगर उनको डर है और हम उनके एक-दो फीट की दूरी में बैठे हुए हैं तो वो डर हमारे अंदर भी आ जाएगा। वायरस का भय तो हमारे अंदर पहले से ही है, सामने वाले के अंदर भी है। घर में बैठे हुए चार लोगों के अंदर भी है। देश के 130 करोड़ लोगों के अंदर है। विश्व की जितनी आबादी है उसके अंदर है। क्या ये डर भी कुछ कर सकता है। डॉक्टर्स हमें ये बता रहे हैं कि डर हमारे इम्युनिटी सिस्टम पर प्रभाव डालता है। ये डर आज नहीं आया है। ये डर तो हमारे जीवन का वैसे भी हिस्सा था। लेकिन, पहले हम कभी-कभी डरते थे। अब तो आयु की भी कोई बात नहीं है।

डर से हमारी इम्युनिटी प्रभावित होती है इसलिए किसी भी परिस्थिति में भी खुद को मजबूत रख करे उसका सामना तभी हम बुराई और बीमारीयों पर नियंत्रण पा सकेगें। खुद को फिट रखने के लिए करें योग और राजयोग।

इम्युनिटी उम्र पर नहीं मन पर निर्भर करता है

जब इस वायरस की बात आती है तो हम कहते हैं 10 से नीचे और 60 वर्ष से ऊपर के लोगों का ध्यान रखना चाहिए। ये बीमारी हो तो किसी को भी सकती है। लेकिन इम्युनिटी सिस्टम आज हम जांच लें। इम्युनिटी आयु पर निर्भर नहीं है। इम्युनिटी तो मन पर भी निर्भर है। हो सकता है कि वो 80 साल के हों, लेकिन मन से बहुत मजबूत हैं। उन्होंने कभी निगेटिव सोचा ही नहीं, अभी भी उनको कोई डर नहीं लग रहा है। अगर हम यह ध्यान रखें तो हम अपनी सोच को जांचना शुरू कर देंगे।

जीवन का मनोविज्ञान
भाग - 23

[डॉ. अजय शुक्ला]
बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

विकसित जीवन का स्वरूप तथा आध्यात्मिक मूल्य सम्पंनता

शिव आमंत्रण आबू रोड। मानव जीवन के सुदृढ़ विकास का परिदृश्य सदा उसकी श्रेष्ठता हेतु पुरुषार्थ में प्रेरणा प्रदान करता है जिसमें सृजनात्मक स्थितियों की उपस्थिति एक नवीन आयाम को प्रस्तुत करने का कारक बनती है। विकसित जीवन के स्वरुप की परिकल्पना उस समय साकार होती है जब व्यक्ति के द्वारा गतिशील जीवन के श्रेष्ठ उद्देश्य की स्वीकारोक्ति को आध्यात्मिक मूल्य से सुसज्जित किया जाता है। मानव को महानता का बोध होने से पूर्व जीवन की श्रेष्ठता के लिए पवित्र कर्म करना आवश्यक है जो उसे स्वयं की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के निर्णय से प्राप्त होता है। दृढ़संकल्पित अन्तःकरण द्वारा विकसित जीवन की वास्तविकता व्यक्तित्व से मुखरित हो जाती है जो आत्मिक उन्नयन की दिशा में व्यक्ति को अग्रसर करती रहती है। आत्मिक उच्चता की प्राप्ति जीवन के परिष्कार का श्रेष्ठतम स्वरुप है जिसे आध्यात्मिक मूल्य से सदा ही सम्पन्न बनाए रखा जा सकता है।

जीवन की निर्णायक स्थिति में आवश्यक बुद्धिमत्ता

आत्म जगत के विचारगत स्वरुप में मानव मस्तिष्क की शक्तियों का प्रभावशाली प्रयोग स्वयं की बुद्धिमत्ता से जुड़े महत्वपूर्ण पक्षों-व्यक्ति, घटना, विचार एवं भावना पर आधारित व्यवस्था को विकसित करने के लिए-आत्मा, मन, बुद्धि, संस्कार, कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य के परिष्कार हेतु गुणात्मक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। बौद्धिक समृद्धि का क्रियान्वयन जब सामाजिक बुद्धिमत्ता के मुख्य घटक से गुजरता है तब स्वयं की शक्तियों, कमियों, अवसरों एवं प्रवृतियों के ज्ञान का मूल्यांकन करते हुए-शिक्षा, अनुभव, सक्षमता, कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता, नवाचार और ईमानदारी का सदुपयोग किया जाता है। आत्मिक शक्तियों के प्रस्फुटन में मानवीय हृदय की भावनात्मक बुद्धिमत्ता जिन मनोभावों को व्यक्त करती है उनमें-स्वयं, परिवार, समाज एवं संस्थान से सम्बंधित व्यक्तियों को अन्तःकरण से क्षमा और प्रेम द्वारा स्वीकारना श्रेष्ठ परिवर्तन का प्रमाण है जिसमें नियम, संयम, जप, तप, ध्यान, धारणा तथा स्वाध्याय का अनुपालन करना होता है। भावनात्मक सम्पन्नता का नैसर्गिक स्वरुप आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को प्रतिपादित करता है जिसके अंतर्गत सर्वधर्म समभाव, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुंबकम के विशुद्ध भाव में-मंसा, वाचा, कर्मणा, समय, संकल्प, संबंध और स्वप्न की पवित्रता नीहित होती है। जीवन की निर्णायक स्थिति के संचालन में निपुण आत्मा जब अपने-अनादि, आदि, पूज्य, ब्राह्मण एवं फ़रिश्ता स्वरुप में होती है तब-ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता और शक्ति की अनुभूति स्वयं के साथ सर्व आत्माओं को स्वमेव हो जाती है।

दृढसंकल्पित अन्तःकरण द्वारा विकसित जीवन का स्वरुप

स्वयं के जीवन की गतिशीलता सदैव इस बात के लिएअभिप्रेरित करती है कि निर्धारित लक्ष्य की पूर्णता श्रेष्ठपरिणाम की प्राप्ति द्वारा सम्पन्न होना महत्वपूर्ण है। पुरुषार्थ की तीव्रता विकासात्मक दृष्टिकोंण को परिवर्तित करने में मददगार होती है क्योंकि अंतर्मन से जीवन के विकसित स्वरुप का निर्धारण किया जाता है। मानवीय प्रवृतियों में उद्यमशीलता का गुण उन स्थितियों में जागृत होता है जबकि व्यक्तिगत क्षमताओं का आरम्भिक परिवेश साहस से भरपूर रहता है। अदम्य इच्छा शक्ति के साथ कर्मजगत का परिष्कार व्यक्ति को उपलब्धि हेतु अन्तःकरण से पूर्णतया दृढ़संकल्पित बना देती है। विकसित जीवन की परिकल्पना का व्यावहारिक स्वरुप व्यक्ति को आत्मिक समृद्धि के लिए सदा ही प्रेरणा प्रदान करता है।

सूचना
सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 110 रुपए
तीन वर्ष 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता
संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे।

नारी को सलाम, नारी का सम्मान कार्यक्रम में बीके ममता सम्मानित

ममता बहन को सम्मानित करते हुए विकास परिषद के सदस्य।

शिव आमंत्रण > आगरा/उप्र। आगरा विकास परिषद् संपर्क शाखा द्वारा नारी को सलाम, नारी का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें आगरा शहर से 15 महिलाओं को नारी सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी क्रम में पिपलमंडी सेवाकेन्द्र प्रभारी ममता बहन को भी सम्मानित किया गया। मधु बघेल, प्रमुख समाजसेवी और माननीय सांसद जी की धर्मपत्नी द्वारा शाल पहनाकर, समाजसेवी प्रीति उपाध्याय धर्मपत्नी विधायक जी द्वारा माला पहनाकर, रावी इवेंट के डायरेक्टर और भारत विकास परिषद् द्वारा मोमेंटो देकर सम्मान किया गया। इसमे बीके दर्शन बहन, बीके रीना बहन, बीके योगेश बहन, बीके प्रीति बहन भी उपस्थित थी।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को गीतम विश्वविद्यालय द्वारा मिला सम्मान

गीतम विश्वविद्यालय के अतिथियों द्वारा बीके मृत्युंजय को सम्मान।

शिव आमंत्रण > आबूरोड। राजयोगी डॉ बीके मृत्युंजय ने गीतम विश्वविद्यालय में 'मूल्यों और शिक्षा में आध्यात्मिकता' पर एक चर्चा की। इस सत्र में विश्वविद्यालय के लगभग 300 छात्रों और संकाय कर्मचारियों ने भाग लिया। उनकी बात के बाद एक प्रश्न और उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय के जीवन के अनुभवों, आध्यात्मिकता में आने वाली चुनौतियों, कॉलेज के जीवन में मूल्यों को कैसे लागू किया जाए आदि पर चर्चा की। वहीं बीके मृत्युंजय को सभी गणमान्य महानुभावों द्वारा सम्मानित भी किया गया। बीके सुप्रिया ने राजयोग थॉट लैब और पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। छात्रों के लिए इसके लाभ को भी बताया गया। इस अवसर पर श्री एम भरत, अध्यक्ष, गीतम विश्वविद्यालय, श्री के शिव रामा कृष्ण, कुलपति, गीतम विश्वविद्यालय, डॉ सीवी राव, प्रो. कुलपति, गीतम विश्वविद्यालय, सिस्टर शिवलिंगन बिहान, प्रभारी ब्रह्माकुमारीज़ विशाखापत्तनम, बीके रामप्रसाद और बीके शैलेश आदि उपस्थित थे।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में.. पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

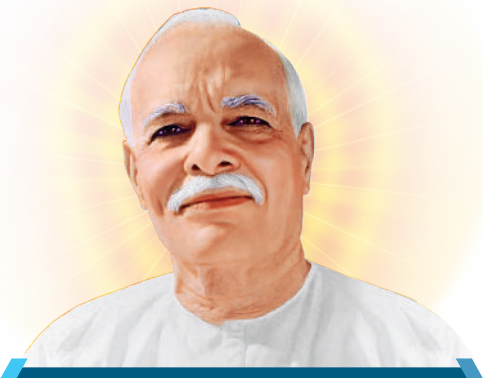

रियल लाइफ

[प्रजापिता ब्रह्मा बाबा]

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

जब ज्ञान यज्ञ में शुरू हुआ योग-तपस्या की भट्ठी कार्यक्रम

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटाने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

कई बार ऐसा भी हुआ कि शिव बाबा ने सन्देश-पुत्रियों को विशेष प्रोग्राम दिए। उस प्रोग्राम के अनुसार वे सप्ताह-भर या अधिक समय तक मौन धारण करती थी। इसे 'मूवी' अथवा 'अव्यक्त अवस्था' भी कहा जाता था। इन दिनों वे केवल थोड़ा-सा फलाहार ही करती थी, बस। उन्हें सारा दिन योग का अभ्यास करने का आदेश होता था। वे प्रातः बहुत जल्दी उठकर योग का अभ्यास प्रारम्भ करती थीं और तब से लेकर दिनभर योग-तपस्या में ही रहती थी। प्रातः अमृतवेले जब परमपिता परमात्मा शिव परमधाम से आकर प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देते थे, जिसे यहाँ 'ज्ञान-मुरली' भी कहा जाता था, तब वे भी ज्ञान सुनती थी और दिन-भर में नित्य कर्म आदि के अतिरिक्त अन्य किसी कर्म की ओर बुद्धि न लगाकर वे योग-तपस्या में ही अचल रूप से रहती थी। इसे 'भट्ठी' के कच्चे बर्तनों को या ईंटों को पक्का किया जाता है अथवा जैसे सुनार भट्ठी में सोने को तपाकर उससे खाद निकाल कर उसे शुद्ध करता है अथवा जैसे लुहार भट्ठी में लोहे को खूब तपाकर फिर उसे कूटकर कोई उपयोगी चीज़ बनाता है वैसे ही वे भी योगाग्नि में निज़ात्मा को तपाकर उससे अशुद्ध संस्कारों की खाद निकाल कर उसकी शुद्धि का पुरूषार्थ करती थी। वे परिपक्व आत्मिक स्थिति प्राप्त करने के लिए ये अभ्यास करती थी। वे स्वयं को प्रभु की लग्न रूपी अग्नि में तपाकर अपने तथा संसार के लिए उपयोगी अर्थात् कल्याणकारी बनने के लिए ये साधना करती थी। इस अभ्यास से उन्हें देह-भान से न्यारापन अनुभव होता था। वे स्वयं को वायु के समान हल्की अथवा फ़रिश्तों के समान दिव्य, अलौकिक, हर्षयुक्त, पवित्र, प्रकाशयुक्त एवं अव्यक्त महसूस करती थी। इसे ही 'अव्यक्त स्थिति' अथवा 'विदेह-स्थिति' का अनुभव कहा जाता था।

योग कि ड्रिल

परमपिता शिव द्वारा मिले प्रोग्राम के अनुसार इस प्रकार का अभ्यास करने के पश्चात् वे ब्रह्मा बाबा के निर्देश के अनुसार अन्य यज्ञ-वत्सों को भी योगाभ्यास कराती थीं। अपने प्रभाव-क्षेत्र में अर्थात् अपने सामने बिठाकर, लक्ष्य समझाकर तथा योग-विधि स्पष्ट करके उन्हें अपनी आत्मिक-दृष्टि की सहायता देकर योगस्थ करती थीं। फिर वो वत्स, स्व-स्थानों पर जाकर भी इसका अभ्यास करते रहते। यज्ञ-पिता इस सारे प्रोग्राम का निरीक्षण करते थे, इसके लिए आदेश-निर्देश देते थे, उचित व्यवस्था भी कराते थे तथा कई बार वे स्वयं भी पधारकर योग का अभ्यास कराते थे और अपनी सर्वोत्तम अवस्था से उनको योगस्थ करने के लिए सहायता करते थे। इस प्रकार के कार्यक्रमों से भी यज्ञ-वत्सों की अवस्था में काफी उन्नति हुई। उन्हें योग की टेव पड़ी और आनन्द मिला।

यज्ञ-वत्सों की दिनचर्या

इस प्रकार सभी यज्ञ-वत्स खूब लग्न से ईश्वरीय याद में मग्न होने का तथा ईश्वरीय विद्या के अध्ययन का कार्य करते रहते। उन दिनों दिनचर्या इस प्रकार होती थी कि प्रातः एक रिकॉर्ड बजता था- ''जाग सजनिया जाग, आध्यात्मिक अर्थ का ही सबसे पहले उनके मन में स्मरण हो जाता था। वे दिनचर्या का प्रारम्भ इसी संकल्प से करते थे कि अब सतयुग अथवा नवयुग आ रहा है और अब हमें अज्ञान-निद्रा को छोड़कर आत्मिक जागृति की अवस्था प्राप्त करनी है और अब यह निद्रा भी तो छोड़नी है। अपने बिस्तर पर ही बैठे-बैठे कुछ मिनट तक वे सभी आत्म-चिन्तन और परमपिता को याद का अभ्यास करते थे। बाद में कई बार ड्रिल भी होती।

उसके बाद वे नित्य कर्म और स्नान आदि से निवृत्त होकर प्रातः 5.30 बजे के लगभग क्लास में योगाभ्यास में बैठते तथा ज्ञान-मुरली सुनते थे। यह कार्यक्रम लगभग डेढ़ या दो घण्टे का होता था। फिर वे सभी नाश्ता आदि करके यज्ञ-सेवा में जुट जाते थे। हरेक बहन और भाई के ज़िम्मे कोई-न- कोई यज्ञ-सेवा का कार्य था। कुछेक तो मिलकर सभी के वस्त्रों की धुलाई करते थे। कुछेक मिलकर भोजन बनाते थे। यज्ञ की मोटरों, साईकिलों आदि की सफाई, मरम्मत आदि भी यज्ञ-वत्स स्वयं ही करते थे। अन्न को साफ़ करना, सब्जी काटना,सिलाई करना,लिखना-पढ़ना आदि-आदि बहुत ही कार्य होते थे। प्रतिदिन काफ़ी संख्या में ईश्वरीय ज्ञान-साहित्य के बुक-पोस्ट भी सैकड़ों व्यक्तियों को भेजे जाते थे। अतः कुछ यज्ञ-वत्स साहित्य रचने के कार्य में और साइक्लोस्टाइल या छपाई के काम में भी व्यस्त रहते। यज्ञ के प्रायः सभी कार्य यज्ञ-निवासी ही बहुत खुशी और स्फूर्ति से किया करते थे। इतने में भोजन का समय हो जाता था।

अगले अंक में क्रमशः

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

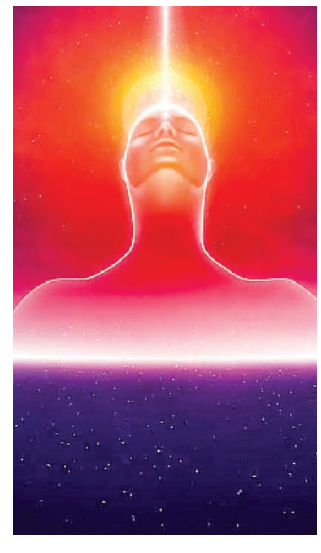

परमात्म छत्रछाया से जीवन बना सदा स्वस्थ्य और खुशनुमा

[बीके राजेश्वरी
ईश्वरीय सेवाधारी,
पानसेमल, मध्यप्रदेश

एक दिन रात्रि में अचानक मेरे दाँतों में दर्द हुआ। उस समय मेरे पास किसी भी प्रकार की कोई भी दवा नहीं थी। रात्रि का समय होने के कारण मैंने अपना दर्द सुप्रिम सर्जन परमात्मापिता को बताया। उसे दिल से याद करते-करते उसके गोद में सो गयी। तो उस रूहानी सर्जन ने अपनी सर्वशक्तियों की किरणें मुझ आत्मा पर लुटा दी और जब मैं जागी तो मेरी दाँतों का दर्द पूर्णतः समाप्त हो गया था। ये अनुभव मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। इसलिए मैं पूर्ण विश्वास और निश्चय से कहती हूं कि आप सभी परमात्मापिता से सर्व सम्बन्ध जोड़ कर उसे याद और प्यार करें और राजयोग का अभ्यास करने के लिए अपने निकटतम ब्रह्माकुमारीज सेवा केन्द्र का लाभ अवश्य लेकर सदा स्वस्थ्य और खुशनुमा जीवन जीयें।

राजयोग से सीखा जीवन जीने की एक अनोखी कला

[पिन्टू पटेल
ईश्वरीय सेवाधारी
देवरिया (उत्तरप्रदेश)

बचपन से ही भक्ति-भाव में डूबा रहता था। मन में वैराग्य की भावना शुरू से ही प्रबल थी। मेरी दादी माँ हमेशा बताया करती थी कि बड़े भाग्य से यह मनुष्य जन्म मिलता है। तो मैं सोचता था कि बड़ा होकर अच्छे कार्य और पुण्य कर्म ही करूंगा। एक बार ब्रह्माकुमारीज संस्थान के द्वारा हमारे गाँव के पास चित्र प्रदर्शनी लगाया था। जिसमें सीढ़ी और गोले का चित्र देखकर मन में एक विचित्र वैराग्य आ गया। लगा कि जीवन का वास्तविक लक्ष्य मिल गया। फिर क्या? राजयोग मेडिटेशन के निरंतर अभ्यास से मेरे जीवन में अद्भुत बदलाव आया। मेरा जीवन परमात्म प्रेम और खुशीयों से भरपूर हो गया। जो पाना था सो पा लिया। इसलिए मैं आप सभी से विनम्र प्रार्थना करता हूं कि आप भारत की सबसे प्राचीनतम और गुह्या विद्या राजयोग मेडिटेशन को अपना कर अपने जीवन को सदा सुख और शांति से भरपूर कीजिए।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रयास से हो रहा कैदियों में सकारात्मक परिवर्तन...

अपराधी से महान आत्मा बनाने का हो रहा प्रयास

नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने का पढ़ रहे पाठ

सिहोरा जेल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि व उपस्थित बंदी।

कैदियों के जीवन परिवर्तन के लिए विशेष रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा उमंग-उत्साह वाले क्लास आयोजित कर उनका मन, बुद्धि, संस्कार, स्वभाव, आचरण और चरित्र को स्वच्छ और पावन बनाने का कार्य हो रहा है।

शिव आमंत्रण सिरोहा/जबलपुर/मप्र.। अपराध का मूल कारण नकारात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा को खत्म करने की दिशा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय संस्थान द्वारा अहम भूमिका अदा कर रही है। पिछले 19 वर्षों से सिरोहा जेल में ईश्वरीय सेवाएं चल रही है। इन सेवाओं की शुरुआत में जेल अधीक्षक दिलीप नायक का सराहनीय योगदान रहा। ईश्वरीय ज्ञान और योग का अभ्यास करने के बाद जेल में सभी कैदी भाईयों की विचारधारा बदल गई। आज से कई वर्ष पहले जो ज्ञान का बीज बोया था। आज वह वट वृक्ष की तरह अनेक आत्माओं के लिए फलदायक बनी है। कितनी आत्माओं की आत्मा रूपी ज्योति जगी, जीने की नई राह मिली।

सन् 2001 से सिरोहा जेल में सेवाओं का शुभारंभ हुआ। धीरे-धीरे वहां ईश्वरीय क्लास ज्ञान राजयोग मेडिटेशन की शुरूआत भी हुई। जहां अनेकानेक कैदियों में अनोखा परिवर्तन देखने को मिला। कई कैदियों ने गंदे नशा का त्याग कर लड़ाई-झगड़े नहीं करने का वायदा भी किया। उन्होंने प्रतिज्ञा के साथ बताया कि अगर हम बाहर निकलते हैं तो सबका सिर्फ कल्याण ही करेंगें।

वर्तमान समय में 35 से 40 कैदी भाई राजयोग का अभ्यास रोजाना करते हैं। राजयोग के अभ्यास से उनकी दिनचर्या में परिवर्तन आया। अपनी दिनचर्या की शुरुवात वह अमृतवेले से करते हैं जिससे उनका पूरा दिन परमात्म याद में बीतता है। इस ईश्वरीय ज्ञान से कर्मो की गहन गति का बोध हुआ। जिसके कारण कैदी भाई अपराध मुक्त और तनाव मुक्त हुए। ईश्वरीय ज्ञान से अनेक आत्माओं की ज्योति जगाई। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा रोज सुबह 8:30 से 9:30 बजे तक ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) सुनाये जाते हैं। संस्थान की इस तरह कि सेवाओं के प्रयास से धर्म, जाति की कोई सीमाएं नहीं है। और वह अच्छे आचरण में बदलने लगी है। कैदी व्यसन मुक्त और तनाव मुक्त होने लगे हैं। बहुत सारे कैदियों ने रिहाई के बाद अपने-अपने स्थानीय सेवा केंद्र के निमित्त ईश्वरीय छात्र बनकर तन, मन, धन से अपनी हर तरह की सेवाएं प्रदान की हैं। कारागृह में कैदी भाई और बहनों को ईश्वरीय महावाक्य सुनाते हैं।

2001 से जारी है राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण

35-40 कैदी प्रतिदिन लगाते हैं ध्यान

25-30 कैदी मुरली महावाक्य का श्रवण करते हैं।

गलती करने वाले से होता है माफ करने वाला बड़ा

येरवडा पुणे जेल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि।

शिव आमंत्रण पुणे। गलती करने वाले से माफ करने वाला बडा होता है। बदला लेने वाला दूसरों को दुःख देने से पहले अपने आप को दुख देता है। सभी इंसान ईश्वर की संतान है तथा सभी एक महान आत्मा है, सभी संसार में अपना-अपना कर्तव्य करने के लिए आते हैं। यह उद्गार महाराष्ट्र में पुणे के येरवडा जेल में कैदियों को माउंट आबू से आए बीके भगवान ने कर्मों की गुह्य गति का पाठ पढ़ाते व्यक्त किये। मौके पर बीके भगवान ने कहा, कि हमारे मन में विचार कर्म से पहले आते हैं। यह विचार ही तो हैं कि किसी के लिए प्यार की भावना को जन्म देते है तो किसी के लिए नफरत की भावना को जन्म देते है। यदि आप किसी व्यक्ति से अच्छा व्यवहार चाहते हैं और उसे बदलना चाहते हैं, तो उसे दुआएं दो उसके प्रति अच्छा सोचो। यदि किसी के प्रति नफरत है और आप उसके प्रति बुरा चाहते हैं तो वह आदमी भी आपके बारे में बुरा ही सोचेगा तथा नफरत करेगा। जो दूसरों को दुःख देता है उसे कभी सुख नहीं मिलता तथा जो दूसरों को सुख देता है उसे सदैव सुख मिलता है। उन्होंने बन्दियों को बताया, कि बीती बात को भुला दो और आगे की सोचो, परमात्मा से दुआएं लो। प्रत्येक व्यक्ति को यही सोचना चाहिए कि अच्छे कर्म करने के लिए मैने इस संसार में जन्म लिया है। उन्होंने बताया, कि मनुष्य ने विषय वासनाओं की चादर ओढ़ी हुई है जो उसे भगवान से बेमुख कर देती है। सहायक जेलर श्री. मयंकर ने अपने सम्बोधन में बन्दियों को बताया कि आप जैसा सोचोगे वैसा ही बन जाओगे। अतः हमें सदैव अच्छा सोचना चाहिए तथा बुरी आदतों को मिटा देना चाहिए। स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रेणुका ने कहा, की बताई बातों को अपने जीवन में प्रयोग करोगे तो अवश्य ही जेल से छुटने के बाद अच्छे नागरिक की तरह जीवन यापन करेंगे। अंत में बीके भगवान ने सभी को कमेंट्री कर मेडिटेशन कराया। कार्यक्रम में येरवडा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रयागा, बीके प्रकाश एवं बीके अमित भी उपस्थित थे।

मेरी नजरिया

कैदियों में देखा अनोखा परिवर्तन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सिरोहा की ओर से बंदियों के बुराईयां नकारात्मक विचारधारा को खत्म करने तथा सकारात्मक विचार नशा मुक्त शिविर पर बंदियों से दृढ़ संकल्प कराया गया जिससे बंदियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। मैं यह निश्चित रूप से मानता हूं कि यदि हम परमात्मा के सत्य ज्ञान पर ध्यान देकर मेडिटेशन करेंगें तो संस्कार अवश्य बदलेंगें। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा कारागार में बंदियों के पुनर्उत्थान एवं मानव कल्याण के हित में किए जा रहे सराहनीय कार्यो के लिए जेल प्रशासन सदैव इस संस्थान का आभारी है। जेल प्रशासन भविष्य में भी आप सभी इसी प्रकार के सराहनीय सहयोग की उम्मीद करता है।

● दिलीप नायक
प्रभारी अधिकारी, सिरोहा जेल, जिला-जबलपुर

कैदी बाहर निकल कल्याण ही करेंगे

अपराध का मूल कारण नकारात्मक विचारधारा हैं इसलिए शिवपिता कहते हैं मीठे बच्चे विचारों को श्रेष्ठ और कर्म को सुकर्म बनाओ। बोल को मधुर, दृष्टि को सकारात्मक, व्यवहारों में अपनापन और निःस्वार्थ भावना हो। प्रायः भगवान को सभी मानते हैं परंतु भगवान की बातों को मानना है अर्थात उनके महावाक्य सुनकर श्रीमत प्रमाण कर्म करने से परमशक्ति, परमानंद, निरोगी काया, परमसुख, बिना मांगे मिलेगा। परमात्मा द्वारा सीखाये जा रहे मेडिटेशन एवं ज्ञान प्रकाश के धारा से प्रभावित होकर कैदियों का जीवन जीने की कला मिलते ही जीवन बदल गया। गम, परेशानी, डिप्रेशन सब खत्म हो गए। खुशी से जेल में भी जीना सीख गए। जब से सिरोहा जेल में सेवाओं का शुभारंभ हुआ तब से धीरे-धीरे वहां ईश्वरीय क्लास ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन की शुरूआत भी हुई। जहां बंदियों में अनोखा परिवर्तन देखने को मिल रहा है। कई कैदियों ने गंदे नशा का त्याग कर लड़ाई-झगड़े नहीं करने का वायदा भी किया। उन्होंने प्रतिज्ञा के साथ बताया कि अगर हम बाहर निकलते हैं तो सबका सिर्फ कल्याण ही करेंगें।

● बीके राजयोगिनी कृष्णा,
सेवाकेंद्र प्रभारी, सिरोहा, जबलपुर

कैदियों को देख लगा साधु-संत की टोली

सन् 2008 से मैं ब्रह्माकुमारीज के ईश्वरीय ज्ञान सेवा हेतु सिहोरा जेल जबलपुर जाता रहा हूं। तो हमने वहां कई कैदियों में अनोखा बदलाव देखा। वे लोग बड़े ही स्थिर मन से परमात्मा का ज्ञान को सुन रहे थे। उन्हें देखकर लग ही नहीं रहा था कि शायद ये लोग कोई अपराधी हो सकते हैं। उन्हें देखकर लग रहा था मानों कई साधु संतो की टोली में पहुंच चुका हूं। जहां ईश्वरीय ज्ञान की धारा बह रही है। सच में वे लोग सच्चे और अच्छे बनने के पुरूषार्थ में लगे हुए थे। इस तरह का बदलाव होता रहा तो एक दिन अवश्य ही यह दुनियां बदलेगी और यह संसार आनंदमय, सुखमय और शांतिमय हो जायेगा। फिर इस धरा पर ही लोग देवी देवता कहलायेंगे। इस तरह से जल्द ही हमारे पास सतयुगी स्वर्णीम दुनियां होगी जहां सुख ही सुख और शांति ही शांति होगा।

● बीके रमेश, व्यवसाय, सिरोहा, जबलपुर, मध्यप्रदेश

करनाल के 3-डी हैल्थ केयर शिविर में डॉ. गुप्ता के विचार

हार्ट पेशेंट के लिए स्ट्रांग पेनकिलर है राजयोग

3डी हैल्थ केयर शिविर दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते डॉ. सतीश गुप्ता एवं अन्य अतिथि।

बिना बायपास सर्जरी के 9000 से अधिक दिल के मरीजों का इलाज किया

शिव आमंत्रण करनाल। डॉ. बीके सतीश गुप्ता ने कहा, हार्ट पेसेन्ट के लिए स्ट्रांग पेनकिलर है राजयोग मेडिटेशन। गुस्सा करने से हार्ट अटैक का खतरा साडे तीन गुणा बढ़ता है और जो उदास रहते है उनका पांच गुना बढ़ता है। हार्ट पेशन्ट और जो पेशन्ट नही वह भी इस बात का ध्यान रखेंगे तो जीवन में बहुत बदलाव का अनुभव कर सकेंगे। माउंट आबू से आए डॉ. बीके सतीश गुप्ता कार्डियोलॉजी एंड मेडिसिन के सीनियर कंसल्टेंट है। डॉ. गुप्ता करनाल में 3 दिवसीय 3डी हैल्थ केयर शिविर में शहरवासियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अब तक बिना बायपास सर्जरी के 9000 से अधिक दिल के मरीज़ों का सफलतम ईलाज किया है। उन्होने कहा, कि हमारी स्मृति से वृति बनती है, वृति से भावना बनती है, भावना के अनुसार विचार चलते है और उसके अनुसार वायुमण्डल बनता है या बदलता है। राजयोग श्रेष्ठ विचार देता है और उस से जीवन का परिवर्तन होता है।

इस शिविर के दौरान सांसद संजय भाटिया, निफा के चेयरमेन प्रितपाल सिंह पन्नु, असंध विधायक शमशेर सिंह, पूर्व विधायक भीमसेन मेहता, घरौंदा के विधायक हरविन्दर कल्याण, कल्पना चावला गवर्मेंट मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर डॉ. जेसी दुरेजा, नगर निगम के डिप्टी कमिश्नर धीरज कुमार, विर्क हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. दलबीर सिंह विर्क, महापौर रेणु बाला, करनाल के सेक्टर 7 की प्रभारी बीके प्रेम, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके मेहरचंद समेत शहर के कई गणमान्य चिकित्सक शामिल हुए। अतिथियों ने अपने वक्तव्य में कहा, कि डॉ. सतीश गुप्ता के सुझाव शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होंगे। उन्होने जो बाते बताई उसमे से दस प्रतिशत भी जीवन में धारण करेंगे तो जीवन में बदलाव महसूस होगा।

एक दृढ़ संकल्प से देशवासी बदल सकेंगे सौ हिमालय जैसी परिस्थिति: बीके शकुन्तला

मनसा संकल्प शक्ति का प्रयोग करते हुये बीके भाई-बहनें।

शिव आमंत्रण बहल। सभी देशवासी एकमत होकर एक ही दृढ़ संकल्प से किसी भी समस्या का अंत करना चाहें तो सौ हिमालय जितनी परिस्थिति भी बदल सकती है। वर्तमान समय कोरोना महामारी से उपजे संकट के खिलाफ सारा देश संयम और नियम को धारण कर एकता का सबूत दे रहा है। तभी तो यूनाइटेड नेशन ने भी भारत के प्रयासों की प्रशंसा की है। बहल सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शकुन्तला ने ये विचार व्यक्त किये।

प्रशासन ने किया बहनों का सम्मान

बीके प्रियंका को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते विधायक

शिव आमंत्रण चरखी दादरी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जिला प्रशासन द्वारा हरियाणा के चरखी दादरी के जनता कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में समाज उत्थान के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए बीके प्रियंका को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए बाढड़ा के विधायक नैना चौटाला, चरखी दादरी के विधायक सोमवीर सांगवान, उपायुक्त श्याम लाल पुनिया तथा अन्य।

स्वर्णिम संसार बसंत पशु मेला एवं प्रदर्शनी रूपवास भरतपुर में लगाई प्रदर्शनी

शिव को याद करने से बुद्धि बन जाएगी स्वर्णिम

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण भरतपुर। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा बसंत पशु मेला एवं प्रदर्शनी का एक भव्य कार्यक्रम मेला ग्राउंड में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में भरतपुर की सह प्रभारी बीके बबिता ने चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन कराते हुए कहा कि मन, बुद्धि, संस्कार का पुंज आत्मा कहलाता हैं। जिस प्रकार गाड़ी को चलाने वाला ड्राइवर होता है उसी प्रकार इस शरीर रूपी गाड़ी को आत्मा चलाती है। आत्मा का पिता निराकार परमात्मा शिव है। वर्तमान समय परमात्मा शिव हम दुःखी आत्माओं की पुकार सुनकर इस धरा पर अवतरित हुए हैं और हमें दिव्य गुणों की धारणा कराके पुनः स्वर्ग में ले जाने के लिए आए हैं। हम सभी आत्माओं को शिव परमात्मा को याद करना है और परमात्मा शिव के बताए हुए मार्ग पर चलना है। मेले का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा, कि मेले का अर्थ होता है मिलन। अर्थात् हम सभी इस मेले में आकर अपनी पुरानी बातों को भूल आपस में एक दूसरे से मिलकर रहे और अपनी एकता का परिचय दे ।

धूम्रपान, गुटका, शराब इन व्यसनों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय है राजयोग

मुख्य अतिथि बार एसोसिएशन के अध्यक्ष जयप्रकाश पाराशर ने कहा, कि ब्रह्माकुमारीज से जो शिक्षाएं मिलती है उसको जीवन में धारण करना चाहिए और व्यसन मुक्त होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि योगेश कुमार, अभिषेक कटारा, नगर पालिका के वरिष्ठ लिपिक राजेश कुमार जैन आदि ने भी अपना वक्तव्य रखा।

अलविदा डायबिटीज

[बीके डॉ. श्रीमंत कुमार]

ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

पिछले अंक से क्रमशः

फलाहार और डायबिटीज

बहुतों के मन में सवाल उठता है डायबिटीज मरीजों को फल खाना चाहिए या नहीं?

शिव आमंत्रण अगर खाना चाहिए तो कौन सा फल खाना चाहिए और कितनी मात्रा में तथा कब-कब खाना चाहिए? आदि-आदि.....। प्रश्न तो स्वाभाविक है परंतु जैसे पहले ही हमने चर्चा कर चुके है कि एक डायबिटीज मरीज को एक साधारण व्यक्ति व स्वस्थ व्यक्ति की तरह जीवन जीना है और स्वास्थ्यकर भोजन की संतुलित मात्रा में ग्रहण करना चाहिए। इस हिसाब से डायबिटीज बीमारी में फलाहार मना नहीं है। परंतु कितनी मात्रा में लेनी है वह समझ होनी चाहिए। कोई भी चीज अति मात्रा में हानिकारक माना जाता है। (Excess of any thing is poison) इस नियम के मुताबिक जब हम संतुलित रूप में फलाहार करते हैं तो हमारा रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है। क्योंकि फल में फ्रुक्टोज (Fructose) होता है, जो खाने के बाद शरीर में विखण्डित होकर शुगर में रूपान्तरित होता है और हमारे ब्लड शुगर को प्रभावित करता है। ज्यादा मात्रा में फल खाने से भी हमारा ब्लड शुगर बढ़ता है। इसके अलावा कुछेक फल खाने से तुरंत ही हमारा ब्लड शुगर बढ़ने लगता है, इसका कारण है उन फलों का गलेयसिमिक् इन्डेक्स (Glycimic Index)ज्यादा है अर्थात उनका सेवन करने के बाद तुरंत हमारा खून में शुगर की मात्रा बढ़ जाती है। इसलिए हमें उन सभी फलों का भी ध्यान रखना चाहिए।

कौन सा फल खाते ही ब्लड शुगर शीघ्र ही बढ़ जाता है?

1.आम, 2.चीकू, 3. केला, 4. खजूर, 5. अनानस (Pine Apple), 6.सीताफल, 7.अंगुर आदि-आदि। इन सभी फल की कम मात्रा में सेवन करने से ब्लड शुगर में विशेष परिवर्तन नहीं आयेगा। एक साधारण व्यक्ति की तरह एक डायबिटीज मरीज को ये सारे फल खाने नहीं चाहिए। अगर कभी इच्छा होती है 50-100 ग्राम खायें तो विशेष फर्क नहीं पड़ेगा। परंतु250-300ग्राम खा लेने से ब्लड शुगर बढ़ता ही है।

कौन से फल एक डायबिटीज़ मरीज खा सकता है?

1.सेव (Apple), 2.नासपाति (Pear), 3. पपीता, 4. अमरूद, 5. तरबूज-खरबूज, 6.जामून, 7.चेरी, बेरी (Cherry, Berry), 8. बेर (Plums, Pitches) 9. करमगें 10. अनार आदि-आदि.....

कितनी मात्रा में फलाहार किया जा सकता है?

देखा गया है उपरोक्त दिया गया लिस्ट से अगर कोई भी फल हम 200-250 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करते हैं तो ब्लड शुगर में इतना फर्क नजर नहीं आता है। इसलिए हमें एक ही बार में केवल 250 ग्राम तक ही स्वीकार करें, चाहे वो कोई एक फल हो वा अनेक बेराईटी (Mixed Fruit) का हो।

कब करना चाहिए फलाहार?

याद रखना है-फल को मेजर मिल्स के साथ न खायें जैसे कि नास्ता, लंच व डिनर। फल को सबेरे-सबेरे व्यायाम करने से पहले, मध्याह्न भोजन से पहले (10-12 बजे) स्नाक्स् की तरह लेने से लन्च से पहले ब्लड शुगर कम होने का खतरा (Hypoglycemia) कम रहता है। सायं काल में 5-6 बजे भी कोई चाहे तो फल स्वीकार कर सकता है। कभी-कभी नाश्ते में अंकुरित मूंग व मेथी दानों के साथ भी फल को मिश्रण कर लिया जा सकता है। इस प्रकार लंच के सलाद (Salad) के साथ भी मिक्स किया जा सकता है। मेजर मिल्स के साथ मिलाने से कैलोरी अधिक हो जाती है इसलिए फलाहार स्नाक्स् के समय लें तो अच्छा होगा।

क्रमशः..

यहां करें संपर्क बीके जगजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

समस्या समाधान

[ब्र.कु. सूरज भाई]
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

भय करता है मनुष्य को कमजोर

शिव आमंत्रण भय का त्याग बहुत आवश्यक है... भय मनुष्य को कमजोर करता है। अनेक योग्यताएं होने के बावजुद भी कोई व्यक्ति ठीक से पर्फार्म नहीं कर सकता। आपने सुना होगा बाईक चलाने का भय। कई लोग बाईक चलाना चाहते है, आता भी है फिर भी डरते है। एक प्रसिद्ध भय है स्टेज का भय। गीत अच्छा गाते है लेकिन स्टेज पर जाते ही, डर से पैर कांपने लगते है। भाषण करने की बहुत अच्छी तैयारी कर ली है लेकिन जाते ही मन घबराने लगता है, सबकुछ भूल जाते है। भय विस्मृति भी बहुत कराता है। कईयों के साथ भय का पर्दा इतना ज्यादा होता है, कि स्मृतियां ब्रेन से डिलीट हो गई, उनकी मेमोरी ही आधी रह गई। हमें इस भय को समाप्त करना है। हम सर्वशक्तिमान के बच्चे भयभित क्यों, क्या शेर के बच्चे को भयभित होते देखा है। हम बहुत निर्भिक बन जाए, हम बहुत शक्तिशाली बन जाए, अपने में विश्वास पैदा करें। मैंने जब गाड़ी सीखी, तो मैं सोचता था हमारे यहां ये भीलों के बच्चे, गाड़ीयां चलाते रहते है, जिनको चलाने की बुद्धि भी नहीं है वो गाड़ीयां दौड़ा रहे है। तो हमारे पास बहुत अच्छी बुद्धि है, हम तो एक्स्पर्ट है, हम क्यों नहीं निर्भिकता पूर्वक चलायेगें, तो भय समाप्त होने लगा। आपको भय होगा, तो सामने से गाड़ी आयेगी तो आप हैडिल छोड़ देगें। आप धीरें-धीरें प्रैक्टिस करे। ठीक है, गाड़ी आ रही है तो स्लो कर लेतें है। कुछ भी होगा ब्रेक लगा लेगें, धीरे चलेंगें। अपने भय को अंतर्मन से हटाना है। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, ये कार्य तो मेरे लिए बहुत छोटे-छोटे है, ऐसे संकल्पों से अपने मनोबल को सदा ही बढ़ाते रहना चाहिए।

स्टेज फियर बहुतों को आगे नहीं बढ़ने देता है। पहली बार आप भाषण करने के लिए खड़े हुए है, डर लगना स्वाभाविक है। जब आप दूसरी बार स्टेज पे खड़े होंगे तो डर थोड़ा कम होगा, तीसरी बार खड़े होगे तो डर और कम होगा और चार, पांच बार करने के बाद शायद आपका डर निकल ही गया हो। और जो लोग पहली बार के डर के कारण दूसरी बार स्टेज पर जाते ही नहीं, उनकी प्रगति का मार्ग रूक जाता है। इसलिए निर्भय होने के लिए भी बार-बार स्टेज पर जाओ। लेकिन कुछ बातें आवश्यक है, बचपन में सुना करते थे, अब्राहम लिंकन अपनी भाषण शैली को बढ़ाने के लिए, अपनी कला को डेवलप करने के लिए जंगलों में जाकर पेड़ों के सामने भाषण किया करते थे। कोई ऐसा भाषण करना सिखे, मेरे सामने हजारों लोग बैठे हैं और मैं भाषण कर रहा हूं। एक काल्पनिक चित्र बनाकर बोलना शुरू किया, आदत पड़ जाएगी। तुम्हारे सामने जो बैठे है वो पत्थर की मूर्तियां हैं, जो तुम बताने जा रहे हो उन्हें कुछ नहीं आता, निर्भिकता पूर्वक अपनी बात सबके सामने रखों, तो इससे भय समाप्त होगा। कॉलेज में एक बहन भाषण करने जाती है, तो जिन्होंने उसे पढ़ाया था वही प्रोफेसर सामने बैठे थे। वो डर गई। लेकिन जब उन्हे याद दिलाया गया कि आत्मा के बारे में इन्हें कोई ज्ञान नहीं है, केवल आत्मा का ज्ञान दो, जो कोर्स में तुम बताती हो। वो उसने देना शुरू किया और देखा तो सब बहुत ध्यान से सुनने लगे। लोगों ने बाद में प्रशंशा कि, कि इतना गहरा ज्ञान बहनजी ने सरल शब्दों में दे दिया। फिर उसमें आत्मविश्वास जागृत हुआ, कि जो ज्ञान हमारे पास है वो संसार में किसी के पास नहीं है।

तो हमें निर्भय होना है, प्रैक्टिस हमें निर्भय बनायेगी। दूसरी बात, हमें सभा में ऑडिएन्स के स्टेज से उंची अपनी स्टेज रखनी है। हमें अपनी मन की स्थिति को बहुत सुन्दर बनाकर लोगों के सामने जाना चाहिए। क्योकि हमारे बोल के साथ हमारे वायब्रेशन भी सेवा करते है। किसी के बोल आपको बहुत प्रभावकारी लगेंगे, किसी के बोल हल्के लगेंगे, वही बात कही जा रही है, किसी को वही बात सुन कर मजा ही नहीं आएगा। तो लोगों को, हमारी बोल के साथ मन की शक्तियों के वायब्रेशन का भी अच्छा अनुभव होता है। इसलिए अपनी स्थिति को श्रेष्ठ बनाना, पावरफुल बनाना परम आवश्यक है।

सोशल विंग की ओर से कोरोना महामारी में फंसे लोगों की मदद के बढ़ाए हाथ

ब्रह्माकुमारीज़ ने की 2500 लोगों के भोजन की व्यवस्था

दो हजार महाराष्ट्र तथा तेलंगाना के फंसे लोग तथा कई श्रमिकों को दे रही सुविधाएं

शिव आमंत्रण आबूरोड। कोरोना महामारी के कारण लगे लॉक डाउन में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में महाराष्ट्र, तंलंगाना के फंसें दो हजार लोगों तथा बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल के पांच सौ श्रमिकों के भोजन, रहने तथा चिकित्सा समेत अनेक सुविधायें ब्रह्माकुमारीज संस्थान उपलब्ध करा कर रहा है। पांच सौ श्रमिकों को एक सप्ताह के लिए राशन उपलब्ध करा रहा है। जिसमें चावल, आटा, दाल समेत उपयोग की सभी चीजें प्रदान कर रही है। इसके साथ स्वास्थ्य के लिए भी चिकित्सा उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके साथ ही उन्हें राजयोग मेडिटेशन की भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। दो हजार लोगों को भोजन और आवास भीः राजयोग शिविर में भाग लेने आये महाराष्ट्र तथा तेलंगाना के लोगों की लाक डाउन के दिन ट्रेन कैन्सिल हो गयी थी उन लोगों के लिए भी भोजन और आवास तथा चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। साथ ही इनके चिकित्सीय सुविधायें दी जा रही है। सोशल डिस्टेसिंग के लिए किया जा रहा प्रेरितः कोरोना से बचाव के लिए सोशल डिस्टेंसिंग तथा मास्क अनिवार्य लगाने के लिए भी लगातार प्रेरित किया जा रहा है। इसके साथ ही उन्हें राजयोग मेडिटेशन का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस अवसर पर सोशल एक्टिविटी ग्रुप के बीके निनित, बीके भानू, बीके रामसुख मिश्रा, बीके मोहन, बीके सचिन, बीके अनूप सिंह समेत कई लोग उपस्थित थे।

ब्रह्माकुमारीज़ के तरफ से की जा रही मदद का लाभ लेते हुए ग्रामीण।

ब्रह्माकुमारीज़ ने कोरोना आपदा से निपटने के लिए 29 क्विंटल चावल व राशन दिया

शिव आमंत्रण रायपुर। जिला प्रशासन की अपील पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने 29 क्वींटल चावल, 3 क्वींटल गेंहू, 2 क्वींटल पोहा , 50 किलो दाल और 50 किलो शक्कर प्रदान किया है ताकि कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए शासन द्वारा घोषित लॉकडाउन के दौरान गरीब और जरूरतमन्द लोगों तक खाद्यान्न पहुंचाया जा सके। विधानसभा रोड स्थित शान्ति सरोवर में क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने सभी खाद्यान्न सामग्री के साथ डोनेशन ऑन व्हील की गाड़ी को शिवध्वज दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी किरण दीदी, वनिशा और ब्रह्माकुमार महेश भाई उपस्थित थे।सभी लोगों को मेडिटेशन का अभ्यास कराया गया एवं परमपिता परमात्मा शिव का संदेश दिया गया। इस अवसर पर सभी के लिए ब्रह्मा भोजन की व्यवस्था भी की गई थी।

राज्यस्तरीय अधिकारियों के लिए हीलिंग पावर ऑफ मेडिटेशन कार्यक्रम आयोजित

सभा को संबोधित करती बीके गोपी एवं उपस्थित श्रोतागण।

शिव आमंत्रण लखनऊ। उत्तर प्रदेश के जानकीपुरम लखनऊ सेवाकेंद्र पर लंदन से सिस्टर गोपी ने हीलिंग पावर ऑफ मेडिटेशन विषय पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रम किया और उन्होंने लखनौ के आईआईएम फैकल्टिज और राज्य स्तरीय अधिकारियों के लिए एक शानदार कार्यशाला की।

आध्यात्मिकता के अनुशरण से ही नारी होगी समर्थ और सशक्त

अपने विचारों को सकारात्मक बना कर मन को शक्तिशाली बना सकते हैं।

फैजाबाद सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए बीके शैलजा।

शिव आमंत्रण फैजाबाद। उत्तर प्रदेश के फैजाबाद में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में बीके शैलजा ने 'आधुनिकता एवं आध्यात्मिकता' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा, की आधुनिकता नारी के विकास और प्रगति के सन्दर्भ में हो न कि पतन के। समय के साथ नारी अवश्य चलें परन्तु उसका जीवन समर्थ व सशक्त हो, श्रेष्ठ हो और प्रेरणा दायक हो। ये सब चीजे उसे केवल और केवल आध्यात्मिकता के अनुसरण से ही प्राप्त हो सकती है। कार्यक्रम का शुभारम्भ विधायक श्रीमती लीला कुशवाहा (विधान परिषद्), सेवाकेंद्र संचालिका बीके शशी, देवा हॉस्पिटल की आय स्पेशलिस्ट डॉ. दीप्ती वर्मा, गोशाईगंज जी.जी.आई. सी. की प्रधानाचार्या श्रीमती माला रानी, आर.एम.पी.जी. इन्टर कॉलेज की प्रधानाचार्या श्रीमती जरीन नजर, जे.बी. अकादमी की प्रधानाचार्या श्रीमती निशा सुब्रमण्यम एवम् बेनीगंज की पार्षद श्रीमती अशोका द्विवेदी ने दीप प्रज्वलन द्वारा किया।

अतिथियों ने सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक भागीदारी पर बातचीत करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा महिला उत्थान के लिए उठाये जा रहे कदमों की सराहना करते हुए वर्तमान समय में महिलाओं के आध्यात्मिक सशक्तिकरण पर जोर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों का तिलक माला व कुमारी स्वप्निल के स्वागत नृत्य से की गई। बीके संध्या ने अतिथियों के सम्मान में सुन्दर कविता प्रस्तुत की। तत्पश्चात् बीके अजय ने संस्था का परिचय दिया। कार्यक्रम के दौरान एस. एन. अकादमी की शिक्षिकाओं ने एक सुन्दर ड्रामा प्रस्तुत किया और सुर सुधा ग्रुप के द्वारा प्रेरणा दायक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। सेवा केंद्र संचालिका बीके शशी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में करीब 150 माताओं एवम् युवा बहनों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हुआ 'दादी गुलज़ार शांति उपवन' का उद्घाटन...

शांति के प्रकम्पन फैलाने के निमित्त बनेगा यह स्थल: दादी

ओआरसी के 19वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित जन समूह एवं अतिथि का स्वागत किया

उद्घाटन में बोलते हुए दादी रतनमोहिनी एवं उपस्थित जनसमूह।

शिव आमंत्रण गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मानेसर से कुछ ही दूरी पर स्थित दादी गुलज़ार शांति उपवन का उद्घाटन बड़े ही भव्य समारोह के साथ किया गया। 4 एकड़ भूमि पर बने उपवन में योग साधना के लिए बने बाबा के कमरे में मन स्वतः ही प्रभु स्मृतियों में टिक जाता है। अपने स्वास्थ्य लाभ के दौरान काफी वर्षों तक दादी गुलज़ार ने यहाँ पर एकांत में रह योग, तपस्या का शक्तिशाली वायुमण्डल निर्मित किया। यहाँ पर आने से ही मन को गहन शांति का अनुभव स्वाभाविक रूप से होने लगता है।

उद्घाटन के इस विशेष अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संस्था की संयुक्त प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में कहा, कि ये भूमि दादी गुलज़ार की तपस्या स्थली रही है इसलिए ये हम सभी के लिए परमात्मा का वरदान है। उन्होंने कहा, कि यहाँ पर योग साधना का एक ऐसा शक्तिशाली वातावरण बनाना है, जिससे आकर्षित हो कोई भी व्यक्ति यहाँ आकर गहन शान्ति का अनुभव कर सके। उन्होंने कहा, कि वर्तमान समय विश्व की सभी आत्माओं को केवल मन की शांति की आवश्यकता है, जिसके लिए इस प्रकार के शक्तिशाली स्थान की ज़रूरत है।

कार्यक्रम में संस्था के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओ.आर.सी. की निदेशिका बीके आशा, बीके गीता, बीके शुक्ला, बीके चक्रधारी एवं संस्था के अन्य कई वरिष्ठ सदस्यों ने शांति उपवन के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एन.सी.आर. से संस्था के अनेक सदस्यों ने शिरकत की।

रक्तदान है सर्वोत्तम समाजसेवा

कादमा सेवाकेंद्र पर जिला उपायुक्त श्यामलाल पुनिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए बीके वसुधा तथा अन्य।

शिव आमंत्रण फरीदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ हरियाणा के कादमा में भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के तत्वावधान में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर में जिला उपायुक्त श्याम लाल पुनिया ने कहा, कि रक्तदान सर्वोत्तम समाज सेवा है इससे बड़ा कोई दान नहीं लेकिन इस सेवा के साथ-साथ अपने जीवन में नैतिक और मानवीय मूल्यों को धारण करना चाहिए तभी हम समाज का उत्थान कर सकते हैं। बीके वसुधा ने कहां, की रक्तदान महादान है जिससे हम किसी के जीवन को बचा सकते है। यह निःस्वार्थ भाव की सेवा है। हम सकारात्मक सोच के साथ रक्त का दान करें तो उसके परिणाम भी सकारात्मक होंगे और यह अध्यात्म को जीवन में धारण करने से सहज संभव होगा।

मोटामावा की दसवीं वर्षगांठ मनाई धूमधाम के साथ

बीके भारती के साथ उत्सव मनाते हुए बीके परिवार।

शिव आमंत्रण राजकोट। राजकोट के मोटामावा सेवाकेंद्र की दसवीं वर्षगांठ धूम धाम के साथ मनाई गई। इस मौके पर अपनी शुभकामनाएं देने गुजरात जोन की निदेशिका बीके भारती ने शिरकत की और सभी को बधाई दी। इसके साथ ही गिरीराज हॉस्पिटल के चेयरमैन रमेश ठक्कर, राजकोट बिल्डिंग एसोसिएशन के प्रमुख परेश गजेरा, सनशाइन ग्रुप इन्स्टीटयूशन के डायरेक्टर डॉ. विकास अरोड़ा समेत कई विशिष्ट अतिथि भी मौजूद रहे। वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह के दौरान बीके रेखा ने सभी को शांति की अनुभूति कराई और बीके चेतना ने 10 अंक का महत्व बताया। तकरीबन 3 हजार से अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम का लाभ लिया।

सांस्कृतिक — फूलों की मनमोहक छटा देख मंत्र मुग्ध हुए दर्शक...

पर्यावरण जागरूकता प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

समर्पित बीके भाई-बहनों को सम्मानित कर लोगों को परमात्म संदेश भी दिया

रिफाइनरी के शो में शामिल अतिथि।

शिव आमंत्रण मथुरा। इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन की इकाई मथुरा रिफ़ाइनरी नगर (उ. प्र.) में 34 वें फ्लावर शो महोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। महोत्सव में 500 से भी अधिक प्रजातियों के पुष्प प्रदर्शित किए गए थे। फ्लावर शो में सेल्फी प्वाइंट, फूलों से सजी कार, फूलों से सजा कृत्रिम पुल और फ्लावर झूला दर्शकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। ब्रह्माकुमारी संस्था ने यूनाइटेड नेशन्स की वर्ष 2020 की थीम इंटरनेशनल ईयर ऑफ प्लेनेट हेल्थ पर ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी का स्टाल लगाया। प्रदर्शनी में बैनर व पोस्टर के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया गया। मौके पर स्थानीय सेवा केंद्र प्रभारी बीके कृष्णा ने कहा, कि ब्रह्माकुमारी संस्था पर्यावरण सुरक्षा के लिए वृक्षारोपण, सफाई अभियान, सोलर पावर, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, जल संचयन और स्कूल कॉलेजों में सेमिनार आदि विभिन्न कार्यक्रमों का सफलता से आयोजन करती है। प्रदर्शनी का शुभारंभ मथुरा रिफ़ाइनरी के कार्यकारी निदेशक अरविंद कुमार ने फीता काटकर किया।

स्व प्रबंधन

[बीके ऊषा]

स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

हर जन्म एक-एक एपीसोड के साथ यह अंतिम जन्म, अंतिम एपीसोड है

पिछले अंक से क्रमशः

शिव आमंत्रण आज संसार में मनुष्य के मन में सबसे अधिक प्रश्न या उलझन कर्म के विषय में कोई अति गुह्य राज की बातें बताई है। कई महान आत्माओं ने भी मनुष्यों को कर्मों की गुह्य गति के बारे में स्पष्ट करने का प्रयास किया है। परन्तु फिर भी व्यक्ति कर्मों को लेकर उतनी ही अधिक उलझन महसूस करता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए मुझे एक घटना की स्मृति हो आई है:-

''एक बार हमारा कार्यक्रम मुंबई में था। जैसे ही सुबह का प्रवचन पूरा हुआ तो स्वाभाविक रीति से एक परिवार वालों ने कहा कि अगर शाम के समय फ्री हों तो वे अपने घर में प्रवचन रखना चाहते हैं, क्योंकि उनकी कॉलोनी में बहुत अच्छे आध्यात्मिक विचार वाले लोग रहते हैं।वे चाहते थे कि उनको भी कुछ आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ मिल जाए। शाम का समय खाली होने के कारण हमने उनको शाम को सात बजे से आठ बजे तक का समय दे दिया। वे बहुत खुश होकर चले गए। हम कुछ समय पहले ही हम उनके घर गये और जैसे ही हम उनके घर पहुंचे तो उनको बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्हें हमारी इतनी जल्दी पहुंचने की अपेक्षा नहीं थी।

जब हम पहुंचे तब सारा परिवार बैठकर टी वी देख रहा था। टी वी पर कोई धारावाहिक चल रहा था। जैसे ही माता-पिता ने हमें देखा तो बच्चों को इशारा किया कि टी वी बंद करो, परन्तु बच्चों ने इशारा किया कि वे नहीं करेंगें। माता -पिता ने कहा अच्छा टी वी का आवाज कम कर दो तो बच्चों ने आवाज कम कर दिया। अब हमें वहीं बैठना था। जहाँ उनकी टी वी चल रही थी । उनकी टी वी का आवाज कम कराकर मात-पिता हमसे बातें करने लगे तो उनके घर में लगभग 14 साल की आयु का बच्चा उठकर आया और बड़ी सभ्यता से हम से कहने लगा कि दीदी आप बुरा नहीं मानना लेकिन आप थोड़े समय के लिए शांति में रहेंगे तो बहुत अच्छा होगा और फिर वह अपना कारण बताने लगा कि यह धारावाहिक बहुत अच्छा है और वे सभी उसको ही देखने के लिए बैठे हैं क्योंकि उस दिन उसका अंतिम ऐपीसोड है जिसमें कई रहस्य खुलने वाले हैं इसलिए वह हमसे निवेदन कर रहा था कि हम बुरा न मानें।

मुझे हँसी आ गई और मैंने उसे कहा कोई बात नहीं हम शांति में रहेंगें। अब सब लोग शांति से टी वी देखने लगे। मुझे भी जिज्ञासा हुई कि इस धारावाहिक में ऐसा क्या है जिसके लिए इस बच्चें ने मुझे चुप करा दिया। मैं भी उसे देखने लगी तो पाया कि एक दृश्य का संबंध दूसरे दृश्य के साथ नहीं था और कहानी भी समझ में नहीं आ रही थी लेकिन पता नहीं उसमें क्या रहस्य स्पष्ट होता था कि बीच-बीच में वह सब खुश हो जाते थे कि वाह बहुत अच्छा दिखाया। हमें कुछ समझ में नहीं आया कि क्या अच्छा था। आखिर में जब वह ऐपिसोड समाप्त हुआ तो भी कोई खास बात नहीं लगी परंतु वे सभी बहुत खुश हुए कि वह धारावाहिक बहुत अच्छा था।

मुझसे रहा नहीं गया तो मैनें उस बच्चे को बुलाकर पूछा कि इसमें क्या अच्छा था हमें तो कुछ समझ में ही नहीं आया। तब उस बच्चें ने मुझे कहा, दीदी, आपने सारे ऐपीसोड नहीं देखे इसलिए आपको कुछ समझ में नहीं आया परन्तु हमने तो सारे ऐपीसोड देखे थे इसलिए हमें अच्छा लगा। वह तो इतनी बात कहकर चला गया लेकिन उसके बाद मैं सोचने लगी कि वह मुझे इतनी गहरी बात समझाकर गया है। मेरे मन में विचार चलने लगे कि इस सृष्टि के विशाल नाटक में हमारे भी कितने जन्म होंगें और हर जन्म एक-एक ऐपीसोड है।

सार सामाचार

अंतरराष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार से बीके पायल सम्मानित

अतिथियों के साथ अवार्ड लेते हुए बीके पायल।

शिव आमंत्रण मैड्रिड। स्पेन के मैड्रिड शहर में आयोजित इंटरनेशनल एक्सिलेंस अवार्ड एवं वर्ल्ड इंटरफेथ पीस कान्फ्रेंस में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में त्रिनिदाद और टोबैगो की कॉर्डिनेटर बीके पायल को 'अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार 2020' से सम्मानित किया गया। बीके पायल को यह सम्मान वैश्विक सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का उत्थान और विश्व शांति और सद्भाव का संवर्धन और संरक्षण में योगदान के लिए प्रदान किया गया है। इस कान्फ्रेंस में स्पेन में इस्कॉन के निदेशक यदु-नंदन स्वामी, अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक आचार्य डॉ. लोकेश मुनि, बंगला साहिब गुरूद्वारा के कार्यकारी सदस्य परमजीत सिंह चंदोक, भारत के प्रमुख इमाम डॉ. इमाम उमर अहमद इलियासी, भिक्खु संघसेन समेत कई विश्व विख्यात लोग मौजूद थे।

31 देशों के 100 से अधिक विदेशियों की सायलेंस रिट्रीट

सभा को संबोधित करते हुए बीके चार्ली।

शिव आमंत्रण गुरूग्राम। ओम् शांति रिट्रीट सेंटर में विदेशियों के लिए पांच दिवसीय साइलेंस रिट्रीट आयोजित की गई। यह रिट्रीट 2010 से प्रतिवर्ष आयोजित होती है जिसमें ब्रह्माकुमारीज संस्थान में नेशनल कॉर्डिनेटर और सेंटर कॉर्डिनेटर भाग लेते हैं। हर वर्ष की तरह इस बार भी अर्जेंटीना, ब्राजील, कनाडा, ब्रिटेन, मैक्सिको, मलेशिया, अमेरिका, फ्रांस, नीदरलैंड आदि से 31 देशों के 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया। ईश्वरीय महावाक्यों पर चिंतन करते हुए, आध्यात्मिक अनुभवों को बढ़ाते हुए, ज्ञान की गहराई में जाते हुए प्रतिभागियों ने 5 दिन पूरी तरह से शांति में बिताए। ओआरसी के शांत वातावरण के साथ-साथ अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, ऑस्ट्रेलिया के बीके चार्ली और मलेशिया की निदेशिका बीके मीरा ने उन्हें मौन में गहरा गोता लगाने के लिए गाईड किया।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में दिया राजयोग मेडिटेशन का ज्ञान

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथि।

शिव आमंत्रण नेपाल। नेपाल के रुपनी में आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए थाना प्रभारी इन्स्पेक्टर नवीन कुमार झा, समाजसेवी हरी सिंह, हरिश्चंद्र सिन्हा, बीके भगवती, बीके नीतू तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारी शीलू ने किया राजयोग केंद्र का उद्घाटन

दिव्य शांति अनुभूति सेवाकेंद्र समाज के लिए समर्पित

पोखरा रिट्रीट मेडिटेशन सेवाकेंद्र का उद्घाटन करते बीके शीलू एवं उपस्थित जनसमूह।

> ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की महिमा करते हुए सबने राजयोग सीखने की इच्छा जताई

शिव आमंत्रण नेपाल। ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल के पोखरा में डिवाईन पीस रिअलायजेशन सेंटर की नीव रखने के कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए बीके दुर्गा, प्रांतीय असेंब्ली मेंबर बिंदु कुमार थापा, कानूनन मंत्री हरी बहादुर चुमन, बीके परिनीता, गंडकी के मुख्यमंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरंग, बीके कमला, बीके शैलेश राज बरल एवं अन्य। कार्यक्रम में उपस्थित माऊंट आबू से राजयोगिनी बीके शीलू और गंडकी के मुख्यमंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरंग, बीके परिनीता एवं बीके परिवार।

रॉयल एयर फोर्स कैप्टन ने साझा किए अपने अनुभव

शिव आमंत्रण लेस्टर। लेस्टर के हॉरमनी हाउस में महिलाओं के लिए लेट्स ऑल बी ईच फॉर इक्वल विषय पर विशेष टॉक शो का आयोजन किया गया। इस टॉक शो में बतौर पैनैलिस्ट यूएन वूमेन नेशनल कमिटी की अध्यक्ष बैरोनेस संदीप वर्मा, लेस्टर ईस्ट की मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट क्लाउडिया वेबे, लोबोरोफ युनिवर्सिटी में चैपलेंसी की हैड डेकोन जान सुटन, रॉयल एयर फोर्स विंग की ग्रुप कैप्टन जो लिंकन, प्रोग्राम डायरेक्टर बीके मौरिन शामिल हुए जिसे '100 वूमेन ऑफ स्पिरिट' नेशनल प्रोजेक्ट की कॉर्डिनेटर फिलिपा बैकहम ने संचालित किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित इस टॉक की शुरूआत यूरोप और मिडिल ईस्ट की निदेशिका बीके जयंति के विडियो मैसेज से हुई। तत्पश्चात् महिलाओं से जुड़े कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। इस टॉक के दूसरे सत्र में रॉयल एयर फोर्स विंग की ग्रुप कैप्टन जो लिंकन ने लोगों को रॉयल एयर फोर्स में अपने 20 वर्षों के वर्किंग एक्सपीरियन्स से प्रेरित किया।

> ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की महिमा करते हुए सबने राजयोग सीखने की इच्छा जताई

सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स अवार्ड कार्यक्रम में उपस्थित बीके वेदांती।

मेडिटेशन कोरोना वायरस से विश्व के प्रभावित क्षेत्रो में शांति के लिए मेडिटेशन ...

विदेशी भाई-बहनों ने लिया राजयोग मेडिटेशन का लाभ

> ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की महिमा करते हुए सबने राजयोग सीखने की इच्छा जताई

शिव आमंत्रण चेन्नई। शांतिधाम सेवाकेंद्र का विदेशियों के समूह ने अवलोकन किया जिसमें यूके, जर्मनी, हांगकांग और यूएसए समेत कई देशों के 26 लोग शामिल थे। अवलोकन करने आए विदेशियों के लिए 'मेडिटेशन टेक्निक फार लॉन्गीविटि' विषय पर एक दिवसीय वर्कशॉप आयोजित की गई। उनको वैल्यू एजुकेशन की कॉर्डिनेटर बीके स्वाती ने राजयोग मेडिटेशन पर संबोधित किया। इस वर्कशॉप की विशेष बात यह रही कि सभी ने कोरोना वायरस से विश्व के प्रभावित क्षेत्रो में शांति के लिए मेडिटेशन किया। समूह के अधिकांश प्रतिभागी पहली बार भारत आए और भारत की आध्यात्मिकता और दिव्य अनुभव को महसूस किया। प्रतिभागि समूह साझाकरण में सक्रिय रूप से शामिल हुए और मूल्य गतिविधियों की खुशी का अनुभव किया। अंत में वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके झांसी द्वारा ईश्वरीय उपहार वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

विदेशी भाई-बहनों के साथ बीके स्वाती और बीके झांसी।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month
प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. कार्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539

RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण
आत्मा की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

रचना | 84 साल से चल रहा है आने वाली स्वर्णिम दुनिया की रचना का कार्य

ब्रह्मा रूपी विश्वकर्मा कर रहे स्वर्णिम विश्व का नवनिर्माण

हजारों वर्षों से हम विश्वकर्मा जयंती मनाते आ रहे हैं। शास्त्रों में गायन है कि विश्वकर्मा जी शिल्पाचार्य वा देव शिल्पी थे। उन्होंने स्वर्ग का निर्माण किया। देवात्माओं के लिए सर्व साधन-सपन्न महलों की व्यवस्था की, जो अतुलनीय थे। विश्वकर्मा के जीवन में जरूर कुछ विशेषताएं रहीं होंगी, जो स्वयं ब्रह्मा ने नई सृष्टि स्वर्ग का निर्माण कार्य उनको दिया। विश्वकर्मा ने सर्व कलाओं रूपी श्रेष्ठ शिल्प द्वारा नव विश्व के निर्माण का कार्य किया जिस कारण वे विश्वकर्मा कहलाए।

शिव आमंत्रण आबू रोड। आज संसार में स्थापत्य कला, मूर्तिकला, वास्तुकला या कारीगरी से सम्बन्धित किसी भी कला में निपुण व्यक्ति अपने को विश्वकर्मा का वंशज वा उत्तराधिकारी समझता है लेकिन विश्वकर्मा समान श्रेष्ठ कर्म नहीं कर पाता क्योंकि वह उनके जीवन की विशेषताओं से अनजान है। यदि वह अपने जीवन में उनकी विशेषताओं को अपनायेगा तो वह भी महान निर्माण कार्य कर सकेगा और कई तरह के कलाओं से स्वयं को महान बनायेगा।

चित्र देखकर चरित्र प्रत्यक्ष होता है

कहते हैं कि भगवान को नया विश्व बनाने का संकल्प उठा, तब ब्रह्मा ने अपने पुत्र विश्वकर्मा को परमात्मा के संकल्प को साकार रूप देने का कार्य दिया जो उन्होंने पूरा किया। विश्वकर्मा के चित्र को देखने से उनका चरित्र हमारे सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। जैसे किसी के हाथ में कुल्हाड़ी देख हम जान जाते हैं कि यह लकड़हारा है, रंग व तुलिका देखने से पता चल जाता है कि यह चित्रकार है। उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में जो अलंकार दिये गये हैं उनसे हम उनके चरित्र को जान सकते हैं। उनके चारों हाथों में क्रमशः रस्सी, माप पट्टी, शास्त्र और कमण्डल या माला दिखाते उनके पास सदा हंस दिखाया गया है। इन सभी अलंकारों का एक विशेष आध्यात्मिक रहस्य है।

विश्वकर्मा के हाथ रहस्यमयी अलंकार

हम देखते हैं कि स्थापत्य कला वा भवन निर्माण में रस्सी का बहुत महत्त्व है। रस्सी अर्थात लक्ष्य को सीधे-सीधे साधना। भवन निर्माण के पूर्व स्तम्भ बनाने के लिए गड्ढे आदि के चिन्ह बनाने में, दीवार को सीधा बनाने या ईंटों को लाइन में रखने में रस्सी का प्रयोग होता है। दूसरा अलंकार है माप-पट्टी अर्थात सटीक लक्ष्य। चाहे सोनार हो या लोहार हो, सभी प्रकार के कारीगर भी अपनी कला को सम्पन्न बनाने में माप-पट्टी का प्रयोग करते हैं।

तीसरे हाथ में शास्त्र दिखाया गया है। जैसे बच्चों के हाथ में पुस्तक देखकर हम समझ जाते हैं कि यह विद्यार्थी है, उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में शास्त्र दिखाने का भाव यही है कि न सिर्फ शिल्पकला में परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान में भी वे मास्टर थे। यह ज्ञान उन्हें, शिव परमात्मा ने पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिया। ब्रह्मा बाबा जानते थे कि जिसकी आध्यात्मिक उन्नति नहीं होगी वह श्रेष्ठ दुनिया का निर्माण नहीं कर पायेगा और अपनी कला को श्रेष्ठ कार्य में नहीं लगा सकेगा। विश्वकर्मा ने ईश्वरीय ज्ञान का जीवन में विकास किया जिस कारण सभी देवों ने उन्हें देवशिल्पी का पद प्रदान किया। चौथे हाथ में कमण्डल व माला दिखायी गई है। विश्वकर्मा परमात्म याद रूपी माला जपते थे। कमण्डल का अर्थ है-बुद्धि उनकी इतनी स्वच्छ और शक्तिशाली था कि सदा शिव की याद समाई रहती थी।

हुनर युक्त इंसान संसार को संपूर्ण सुखमय और शांतिमय बनाने में अपनी कलाओं का योगदान देकर विश्वकर्मा को प्रत्यक्ष करना है।

पवित्रता का महत्त्व

विश्वकर्मा के सम्मुख हंस पवित्रता का प्रतीक है। इस संसार में जिन्होंने भी महान कार्य किया वा असम्भव को सम्भव कर दिखाया, उनमें पवित्रता की शक्ति थी। जिसके जीवन में पवित्रता नहीं, वह कभी भी महान कार्य नहीं कर सकता चाहे वह धर्मनेता, राजनेता, संगीतकार या शिल्पकार क्यों न हो। आज भी हमारे सामने शिल्पकला के अद्भुत नमूने हैं। वेदों आदि में भी शिल्पकर्म को सत्कर्म माना गया है। यह कार्य पवित्र व्यक्ति ही कर सकता है। शिल्पकला में पवित्रता को स्थान न देने से आज के भारत में श्रेष्ठ रचना देखने को नहीं मिलती। महान शिल्पी बनने वाले को पवित्रता अपनानी चाहिये। विश्वकर्मा का जीवन हमारे लिये आदर्श है। वे ईश्वरीय ज्ञान, योग और पवित्रता के बल से महान देवशिल्पी बने। हम कई वर्षों से उनकी पूजा-अर्चना करने के बावजूद दुःखी और अशान्त हैं, इससे सिद्ध है कि कर्म करने के जो आध्यात्मिक सिद्धान्त हैं, वे हमारे जीवन से लोप हो गये हैं। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हर शिल्पकार आध्यात्मिकता से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को समाज के लिये आदर्श बनाए तभी हम विश्व को स्वर्ग बना पायेंगे।

रचयिता की रचना है विश्वकर्मा

विश्व रचयिता परमात्मा शिव पिता इस धरा धाम पर अवतरित हो अनेक विश्वकर्मा की रचना कर रहे हैं। सृष्टी को नया स्वर्णीम बनाने के लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा बाप को अपना बनाकर मास्टर रचयिता बनना है। हमें परमात्मा बाप की श्रीमत पर चल कर संपूर्ण सुखमयी दुनिया बनाने की निरंतर सेवा करनी है। परमात्मा की याद से ही पुरानी पतित दुनिया का परिवर्तन संभव है।

स्व. राजयोगिनी दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू राजस्थान

परमात्मा का विश्वकर्मा बन कर्म करो

संसार में संपूर्ण सच्ची शांति और प्रेम के लिए परमात्मा बाप की आज्ञा पर चलकर हमें उनका मास्टर रचनाकार कल्याणकारी बन कर दिखाना है। तभी संसार संपूर्ण रीति से परिवर्तित होकर सतयुगी हो जायेगी, जहां एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत के साथ हम सब संपूर्ण मानव अर्थात सतोप्रधान देवी-देवता होगें। इसके लिए हम सब को अपनी सहयोग की एक-एक अंगुलि देकर मास्टर रचनाकार ब्रह्मा अर्थात विश्वकर्मा बन श्रेष्ठ कर्म करना है।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विश्वकर्मा बन करें सतोप्रधान रचना

समाज में सात्विक-सकारात्मक क्रांतिकारी बदलाव के लिए हम सब को जागरूक बन सृष्टि के अज्ञान अंधकार को मिटाना ही होगा, तभी यह कलह-कलेश रूपी तमोप्रधान कलयुगी दुनिया बदलकर संपूर्ण अत्याधुनिक, सतोप्रधान विज्ञान वाली सुखमयी संसार बना सकते हैं। हम सब को मास्टर विश्वकर्मा बन सतोप्रधान रचना करनी होगी।

राजयोगी बीके निर्वैर,
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

श्रेष्ठ सृजनहार आत्मा ही विश्वकर्मा

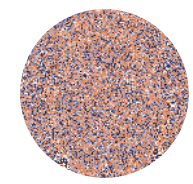

दुनिया को सतोप्रधान सुखमय बनाने के लिए परमात्मा शिव बाबा हमें श्रेष्ठ सृजनहार, मास्टर रचयिता, मास्टर ब्रह्मा, मास्टर पालनहार के साथ बुराई को नष्ट करने वाले विनाशकारी मास्टर शंकर भी बनाया है, जिससे हम पुरानी पतित दुनिया को नष्ट कर एक नई स्वर्णीम दुनिया बना सकें, सभी सोलह कला अर्थात् संपूर्ण पवित्र सर्वगुण संपन्न रहें।

राजयोगी बीके करुणा
अध्यक्ष, ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया प्रभाग, माउण्ट आबू, राजस्थान

जहां हिम्मत है वहां परमात्मा की मदद है

जहां परमात्मा की याद है वहां हर कार्य सहज है, असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। परमात्मा की याद से परमात्मा की एक्स्ट्रा मदद मुश्किल को सहज बना देती है। कोई कार्य कितना भी मुश्किल हो लेकिन परमात्मा की याद है तो सदा उमंग, हिम्मत और अथकपन की शक्ति का अनुभव होगा, परमात्म प्यार की अनुभूति होगी। कभी थकावट की महसूसता नहीं होगी। हर कार्य परमात्मा की याद में रहकर करने से हर कार्य श्रेष्ठ होगा। परमात्मा की याद में रहकर किया हुआ कर्म पूजा है जो हमें सर्व की दुआएं और आर्शीवाद दिलाता है। कर्मियों की सदा कर्म करने के साथ परमात्मा के साथ का अनुभव कर सकते है।

आज का मजदूर व्यसन और तनावग्रस्त है

सशक्त राष्ट्र के साथ बिना हाथ के मनुष्य का जीवन बड़े कष्टों में बीता है। वह अच्छा सोच सकता है लेकिन हाथ न होने के कारण उसे कर नहीं सकता। ठीक उसी प्रकार विश्व में प्लान बनाने वाले डिजाई न बनाने वाले बहुत हैं लेकिन उसे साकार रूप देने की क्षमता कारीगर व मजदूर द्वारा ही संभव है। इसलिए कारीगरों, मजदूरों को जिस राष्ट्र में कमजोर समझा जाता है वहां श्रेष्ठ विचार होने के बाद भी श्रेष्ठ कार्य नहीं हो सकता। इसलिए आज कारीगर और मजदूरों को शक्तिशाली बनाना आवश्यक है जो श्रेष्ठ भारत का निर्माण कर सकता है। आज का मजदूर व्यसन और तनावग्रस्त है जिसके कारण उसकी कार्य क्षमता दिन-प्रतिदिन घट रही है। जो राष्ट्र को उचित सहयोग देने में असमर्थ है इसलिए हमें मजदूर और कारीगर को सशक्त बनाने की दिशा में लगातार कार्य करना होगा और इस दिशा में विश्वकर्मा ग्रुप निरंतर कार्य कर रहा है और आगे भी कारीगर और मजदूरों को सक्षम बनाने के लिए कार्य करता ही रहेगा।

आदर्श जीवन के लिए परिवर्तन करें

काम-वासना को पवित्रता में परिवर्तन करें, क्रोध को शांति में परिवर्तन करें, लोभ का त्याग में परिवर्तन करें, मोह का सुख में परिवर्तन करें, अहंकार को ज्ञान में परिवर्तन करें, वैर का शक्ति में परिवर्तन करें, आलस्य का उमंग उत्साह में परिवर्तन करें, मानव जीवन में हर एक व्यक्ति की विशेष दो धारणाएं एक कर्म और दूसरा धर्म, धर्म में स्थित होकर कर्म करना प्रगति का आधार, धर्म में स्थित हुए बिगर जीवन के कर्म में सफलता मिल नहीं सकती। धर्म अर्थात विशेष धारणाएं, मैं क्या हूं इसी धारणा अर्थात धर्म के आधार पर कर्म करने से श्रेष्ठ कर्म होंगे और आपके कर्म सबको सुख प्रेम और आनंद की अनुभूति कराएंगे हमें सदा कर्म करने के पहले धर्म अर्थात शांति, प्रेम, सुख, आनंद जैसे श्रेष्ठ गुणों में स्थित होना है इन गुणों की धारणाओं के आधार पर कर्म करने से सदा समर्थ और श्रेष्ठ कर्म होंगे।

कारीगरों की सेवा से बना सकते हैं स्वर्णिम समाज

आज मनुष्य स्वयं दुःखी होकर दुःख ही बांटता है। चारों ओर दुःख अशान्ति का माहौल है, उसे बदलने का आरंभ स्वयं से ही करना होगा। विश्व को परिवर्तन करने का फाउण्डेशन स्व परिवर्तन है। स्वयं को चरित्रवान सत्यनिष्ठ बनाये बिगर हम श्रेष्ठ विश्व का निर्माण नहीं कर सकते हैं। मकान का फाउण्डेशन दिखता नहीं है लेकिन पूरे मकान की आधारशिला उसका फाउण्डेशन है। यदि मकान का फाउन्डेशन गलत है तो सही मकान का निर्माण करना असंभव है। उसी प्रकार हम दुःखी हैं तो सुखमय विश्व का निर्माण नहीं कर सकते। अपने श्रेष्ठ कर्म से स्वयं को बदलें फिर अपने श्रेष्ठ कर्म से परिवार को श्रेष्ठ बनायें। जब अपने श्रेष्ठ कर्म से परिवार को श्रेष्ठ बनाने में सफलता मिल जाए तो अपने श्रेष्ठ कर्म से समाज को श्रेष्ठ बनाने लग जाएं। जब समाज श्रेष्ठ बन जाए तो अपने श्रेष्ठ कर्म से जिस राज्य में रहते हो उसे अपने श्रेष्ठ कर्म से श्रेष्ठ बनाओ। जब राज्य को श्रेष्ठ बनाने में सफलता मिले तो अपने श्रेष्ठ कर्म से आप जिस देश में रहते हो उसे श्रेष्ठ बनाने में लग जाओ। जब देश को श्रेष्ठ बनाने में सफल हो जाओ तो अपने श्रेष्ठ कर्म से विश्व को श्रेष्ठ बनाने में लग जाओ। आज विश्व को सुंदर बनाने वाले विश्वकर्मा की विश्व को जरुरत है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग कि शिक्षा से विश्वकर्मा समान मानव का निर्माण हो सकता है।

विश्वकर्मा समान श्रेष्ठ मानव का निर्माण

एक श्रेष्ठ घर का निर्माण करना हो तो हर प्रकार के कारीगर की आवश्यकता पड़ती है। जब हर प्रकार के कारीगर माला के मोती के रुप में आपस में मिलकर कार्य करते हैं तो वह राष्ट्र व विश्व को उत्तम व्यवस्था देता है जिसमें सभी सुख पूर्वक रह सकते हैं। जिस कारीगरों के माध्यम से विश्वकर्मा ने स्वर्णिम दुनिया का निर्माण किया आज वही कारीगरों के परस्पर स्नेह न होने के कारण यह विश्व दुःखदायी बन गया है। सत्यता, ईमानदारी व श्रेष्ठ कर्म के सिद्धांत का ज्ञान न होने के कारण आज का कारीगर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार, भय, आलस्य के वशीभूत होकर दुःखी अशान्त हो गया है। आज हमें विश्वकर्मा को याद करने की जरूरत है जिन्होंने सुन्दर विश्व का निर्माण किया। लेकिन आज उसी विश्व को नष्ट करने के लिए अणु बम, परमाणु बम का निर्माण किया है। ऐसे समय विश्व को एक सूत्र में बांधने के लिए परमात्म ज्ञान की आवश्यकता है।

विश्वकर्मा ग्रुप सेवा करने का तरीका

सुपरवाइजर, कॉन्ट्रैक्टर ग्रुप, जो कार्य करवाने की क्षमता रखते हैं। जिनके पास 10-15 से अधिक कारीगर कार्य करते हैं। मर्चेण्ट व मेटिरियल सप्लायर ग्रुप जो सुपरवाइजर, कॉन्ट्रैक्टर इत्यादि जो मटेरियल सप्लाई करते हैं तथा अपने प्रोडक्शन के लिए एडवरटाइज भी करते हैं। उनके लिए अलग-अलग कारीगरों के 50-50 के ग्रुप बनाकर उनकी अलग-अलग सेवा कर सकते हैं। जैसे 50 ज्वैलर, 50 कारपेण्टर या सभी प्रकार के कारीगरों को मिलाकर इकट्ठा संगठित रूप से सेवा का कार्यक्रम रख सकते हैं और उसमें वीआइपी के रूप में, स्पीकर के रूप में कारीगरों से जुड़े मर्चेण्ट व मटेरियल सप्लायर, कम्पनी के मैनेजर इत्यादि को बुला सकते हैं। आर्किटेक्ट कॉलेज और आर्किटेक्ट के ग्रुप का स्पेशल सेमिनार कर सकते हैं। जहां बड़ी-बड़ी कंपनियां फैक्ट्रियां कारीगरों का संगठन कार्य करता हो, वहां विश्वकर्मा एग्जीबिशन और राजयोग शिविर का आयोजन कर उनको परमात्म संदेश दे सकते हैं। खासकर विश्वकर्मा दिवस 17 सितंबर और अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस1 मई पर विशेष प्रोग्राम कर सकते हैं।

विश्वकर्मा ग्रुप का सेवा क्षेत्र

विश्व के प्रत्येक वर्ग किसी न किसी रुप से कारीगरों एवं वास्तुकारों से जुड़ा हुआ है। कुछ सार रूप में वास्तुकार और कारीगरों की सेवा क्षेत्र निर्धारित किया है जो निम्नलिखित है.

1. **हर प्रकार के डिज़ाइनः** वास्तुकार इंटीरियर डिजाइनर्स, फैशन डिजाइनर्स, ज्वेलरी डिज़ाइनर, स्टेच्चयू डिज़ाइनर, गार्डन डिजाइनर, एग्जीबिशन और मेला डिजाइनर।
2. **हर प्रकार के कॉन्ट्रैक्टरः** बिल्डिंग, इलेक्ट्रिक, सिविल, आयरन, मेकिनिकल, मार्बल, रोड, रेलवे और गार्डन कांट्रेक्टर इत्यादि।
3. **हर प्रकार के कारीगरः** स्वर्णकार, काष्ठकार, ताम्रकार, लोहकार, रंगकार, चर्मकार, कुंभार, भोजन कारीगर, कारपेंटर, टेलर, वेल्डर, ज्वेलर्स, हलवाई, हस्तशिल्पी,मूर्तिकार और मिस्त्री।
4. **हर प्रकार के मजदूर यूनियनः** लीडर ऑटो यूनियन लीडर विश्वकर्मा मंदिर के अध्यक्ष इत्यादि जैसे इन संगठनो में जाकर इनकी सेवा कर सकते हैं।

सभी धर्मों की शिक्षाओं को अपनाकर कर्म करने वाला ही विश्वकर्मा है

हिंदू	मुस्लिम	बौद्ध	क्रिश्चियन	जैन	सिख	सन्यास
धर्म से ज्ञान उठाओ	धर्म से शक्ति अपनाओ	धर्म से शांति अपनाओ	धर्म से प्रेम अपनाओ	धर्म से अहिंसा अपनाओ	धर्म से आनंद अपनाओ	धर्म से पवित्रता अपनाओ

विश्वकर्मा ग्रुप का लक्ष्य और उद्देश्य

- वास्तुकार और कारीगरों के व्यक्तिगत जीवन में उच्च आदर्शो का विकास करना।
- वास्तुकार और कारीगरों में दैवीय गुण और नैतिक मूल्य लाकर सशक्त बनाना।
- आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग कि शिक्षा से वास्तुकार और कारीगरों को व्यसनमुक्त और तनाव मुक्त बनाना।
- अपने नवरो और कारीगरी से स्वर्णिम विश्व के निर्माण में सहायक बनना।
- विश्वकर्मा प्रदर्शनी, विश्वकर्मा ज्ञान वर्धक खेल प्रदशनी, विश्वकर्मा व्यसन मुक्त प्रदर्शनी, विश्वकर्मा कर्म सिद्धांत प्रदर्शनी के माध्यम से वास्तुकार और कारीगरों में जागृति लाकर श्रेष्ठ बनाना।
- आध्यात्मिक विश्वकर्मा जागृति अभियान के माध्यम से वास्तुकार और कारीगरों को संगठित कर परस्पर प्रेम और सद्भावना का विकास करना।
- वास्तुकार और कारीगरों में सकारात्मक उर्जा बढ़ाने के लिए गीत, स्लोगन कार्ड, फिल्म इत्यादि का निर्माण करना।
- वास्तुकार और कारीगरों की कार्य क्षमता में बुद्धि और मनोबल बढ़ाने के लिए शिविर, सम्मेलन इत्यादि का निर्माण करना।
- उर्जा बचाव के लिए प्रेरित करना तथा साथ-साथ उर्जा के स्त्रोत बढ़ाने में सहायक बनना।

राजयोगी बन अंतर जगत के निर्माता बनें

जीवन में मंगल कब होगा

आज सेवन वंडर्स के साथ-साथ कई नए वंडर्स का निर्माण कर चुके विज्ञान ने रात को दिन बना दिया है। बड़े-बड़े पुलों का निर्माण कर दो शहरों को आपस में जोड़ दिया है। बड़े-बड़े राजमार्गों का निर्माण कर दिया है। हम चांद पर पहुंच चुके, अब मंगल पर जाने की सोच रहे हैं, लेकिन हमारे जीवन में मंगल कब होगा यह सोचने की बात है? हमने बिजली के द्वारा रात के अंधकार को समाप्त करने की शक्ति प्राप्त कर लिया, लेकिन अंतर जगत के अहंकार को कैसे मिटाया जाए इसकी जानकारी हमें नहीं है। बड़े-बड़े पुलों का निर्माण कर दो शहरों को तो जोड़ दिया लेकिन भाई-भाई को मिलाने में नाकामयाब रहे हैं। बड़े-बड़े राजमार्गों का निर्माण किया है लेकिन परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग हमें नहीं पता है। अणुबम, परमाणु बम विकसित कर लिया है लेकिन आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान जो हमारे अंतर जगत का विकास कर सकता है, उसका ज्ञान हमारे पास नहीं है। यदि हमने बाह्य जगत के विकास के साथ-साथ अंतर जगत का विकास नहीं किया तो पूरे विश्व का विनाश हो सकता है। इसलिए जरूरत है आज के युग में कोई एक व्यक्ति भी अशांत हो या दुःखी तो उस व्यक्ति की अशांति दुःख उस राज्य या देश को बहुत बड़ी हानि पहुंचा सकती है। उसके विनाश का कारण बन सकती है।

आज शांति-प्रेम के निर्माण करने वाले कॉन्ट्रेक्टर की आवश्यकता

आज डिजाइनर नए-नए डिजाइन बनाकर अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं। चाहे वह वास्तुकार हो, चाहे वह ड्रेस डिज़ाइनर हो, चाहे वह ज्वेलरी डिज़ाइनर, चाहे वह फर्नीचर डिजाइनर हो। लेकिन जिसमें अंतर जगत को श्रेष्ठ बनाने का कला प्राप्त है वह हरेक धर्म में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है। ऐसे परमात्मा के महान डिजाइनर जो हमें सुख, शांति, प्रेम, आनंद से भरपूर कर सकती है। ऐसी डिजाइनर की आज हमें आवश्यकता है। आज कांट्रेक्टर बड़े-बड़े भवन, राजमार्ग, हवाई जहाज या बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों का निर्माण करवाते हैं लेकिन परमात्मा के मार्गदर्शन अनुसार अपने जीवन में शांति और प्रेम का निर्माण करने में नाकामयाब हैं। परमात्मा के मार्गदर्शन अनुसार चलकर डाकू पंचम सिंह जैसे खूंखार व्यक्ति ने अपने जीवन में शांति, प्रेम और सद्भावना का निर्माण कर सबको संदेश देने का कार्य कर रहे हैं। आज ऐसे शांति प्रेम के निर्माण करने वाले कॉन्ट्रैक्टर की हमें आवश्यकता है। हम अपनी कारीगरी से सोने और लकड़ी जैसे अनेक वस्तुओं को आकर्षक बना सकते हैं लेकिन प्रेम, शांति, सुख का निर्माण करने की कारीगरी को हम भूल चुके हैं।

श्रेष्ठचितन से मन की कार्यकुशलता बढ़ती है

जब हमारे विचार शुद्ध, पवित्र होकर दूसरों के लिए सुखदायी, शुभभावना-शुभकामना संपन्न होते हैं तो हमारी बुद्धि भी उसी अनुसार निर्णय देती है। बुद्धि द्वारा दिए गए निर्णय के आधार पर ही हमारी कर्मेन्द्रियां शरीर से कर्म करती हैं। जैसे-जैसे राजयोग के माध्यम से हमारा सकारात्मक और श्रेष्ठ चितन बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे हमारे विचारों में सकारात्मकता आती जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो राजयोग के माध्यम से हमें खुद की कमी-कमजोरियों को पहचानने उन्हें दूर करने का मौका मिलता है। जब हम एकांत में बैठकर चितन करते हैं तो जीवन से जुड़ी समस्याएं का समाधान मिलने लगता है। चितन श्रेष्ठ होने से मन की कार्यकुशलता बढ़ जाती है और कर्मों में प्रवीणता आने लगती है। एक अभ्यास के बाद हमें जीवन जीने की श्रेष्ठ कला मिल जाती है। जब हम कर्मों पर अटेंशन रखते हैं तो हमारे कर्म श्रेष्ठ कर्म बन जाते हैं और तनाव, चिता, दुःख, हीनभावना, पश्चाताप और आत्म ग्लानि कोसों दूर चली जाती है। राजयोग का अभ्यास किसी भी समय, किसी भी स्थान पर किया जा सकता है। इसके लिए न उम्र का बंधन है और न जात-पात का। राजयोग तो आत्मदर्शन कराने वाला और राजाई पद दिलाने वाला सर्वश्रेष्ठ योग जिसकी महिमा गीता में भी गाई हुई है।

राजयोग को योगों का राजा कहा जाता है

हम जानते हैं कि यह विश्व एक समय में स्वर्ग कहा जाता था। जहां बाह्य सुख के साधन के साथ-साथ आंतरिक गुणों से संपन्न देवी-देवता निवास करते थे। जहां गाय और शेर एक ही घाट का पानी पीया करते थे। जहां घी-दूध की नदियां बहती थी। अहिंसा को लोग अपना धर्म समझते हुए सभी दैवी गुणों से संपन्न थे। आज हमें भी गुणों से संपन्न बनने के लिए राजयोग सीखना होगा। राजयोग को योगों का राजा कहा जाता है इसमें सभी योगों का सार समाया हुआ है। यह योग हमारे मन से दूषित विचारों को दूर कर पावन बना देता है। वास्तव में राजयोग अंतर्जगत की एक यात्रा है। इसके माध्यम से हम अपने विचारों को एक सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाते हैं और श्रेष्ठ दिशा देते हैं।

प्रकृति पति बनकर प्रकृति के तत्वों का सम्मान करें

आज प्रकृति के पांचों तत्व दुःखदाई बन गए हैं, आकाश से ओले गिर रहे हैं, जो खेती को नुकसान कर रहे हैं। हवा प्रदूषण के कारण जहरीली हो गई है। चारों ओर आगजनी की घटनाएं घट रही है, लोगों के घरों को जलाया जा रहा है। गाड़ियों को जलाया जा रहा है, नदियों में बाढ़ आ रही है, जिसके कारण गांव जल मई हो रहे हैं। मिट्टी आज बंजर बनती जा रही है उसका कारण हमारी मनः स्थिति है। जब हमारी मनः स्थिति श्रेष्ठ थी, तब आकाश से फूलों की बरसात होती थी। फूल और पेड़ों की पत्तियों से हवा टकराकर वायु हमारे जीवन को संगीतमय बना देती थी। अग्नि अनेक प्रकार के व्यंजन को पकाकर हमारे सामने 36 प्रकार के व्यंजन प्रदान कर दी थी जहां नदी का पानी भी इतना शक्तिशाली था जिसके लिए गायन है कि दूध की नदियां बहती थी। जहां पृथ्वी हमें फूल और फल से भरपूर कर दी थी क्योंकि हमारा मन, ज्ञान, गुण और शक्ति से संपन्न था। हम प्रकृति पति बंद प्रकृति का ध्यान रखते थे लेकिन आज हम प्रकृति की पालना के बदले उसका हनन कर रहे हैं। आज वही प्रकृति हमारे विनाश का कारण बनती जा रही है इसलिए आवश्यक है हम सभी उस प्रकृति का सम्मान कर उसकी पालना करें।

व्यसन मुक्त कारीगर ही देवी देवताओं के मूर्ति बना सकता है:

एक व्यक्ति जब देवी देवताओं की मूर्ति का निर्माण करता है उस समय वह एक हाथ से बीड़ी तंबाकू गुटका का सेवन करता है जब वह मूर्ति का निर्माण हो जाता है तब उस मूर्ति के दर्शन के लिए लाखों लोगों की लाईन लगती है, लोग कहते भी है जिसकी रचना इतनी सुंदर और रचनाकार कितना सुंदर होगा, लेकिन जिस व्यक्ति ने उस मूर्ति का निर्माण किया, उसको कोई देखना भी पसंद नहीं करता इसलिए प्रत्येक कारीगर जो सुंदर भवन, सुंदर मूर्ति, सुंदर ज्वेलरी डिजाइनर का निर्माण करता है। साथ-साथ अपने जीवन का भी निर्माण करें न सिर्फ हमारी रचना सुंदर हो लेकिन हम स्वयं भी अपने जीवन को सुंदर बनाएं, तभी-सभी हमें श्रेष्ठ नजर से देखेंगे।

आज का मनुष्य अपने उल्टे कर्म के कारण ही दुःखी-अशांत और परेशान है

किसी कवि ने बहुत अच्छा कहा है देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान चांद बदला तारे न बदला कितना बदल गया इंसान, आज भी सूर्य अपना प्रकाश दे रहा है लेकिन जो मनुष्य गुणवान था जो गुणों के आधार पर कर्म करने की शक्ति थी वह न होने के कारण आज विश्व में दुःख अशांति बढ़ते जा रहा है और प्रत्येक व्यक्ति के कारण दुखदाई बनते जा रहे हैं तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें हम श्रेष्ठ कर्मों को अपनाकर बुराइयों से मुक्त होकर विश्व को सुंदर बनाने के कार्य में सदा मददगार सहयोगी रहेंगे।

विश्वकर्मा की विशेषता और आध्यात्मिक रहस्य

कारीगरों का उत्साह बढ़ाएं

आज विश्व की समस्याओं को मिटाने के लिए तथा अपने भविष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए हरेक वर्गो के कारीगरों का विशेष रोल है जो अपनी कारीगरी से विश्व को सुंदर बना सकता है। उन्हें हमेशा उत्साह और उमंग बढ़ाने की जरूरत है। तभी वे सभी अपने उत्तरदायित्व को अच्छी तरह से निभा पाएंगें और यह संसार नर्क से स्वर्ग की ओर बढ़ेगा।

●राजयोगिनी बीके रानी
सेवाकेंद्र प्रभारी, मुजफ्फरपुर, बिहार

श्रेष्ठ सृजनता का निर्माण

संसार में जो व्यक्ति सुंदर फर्नीचर का निर्माण कर सकता है, सुंदर मूर्ति का निर्माण कर सकता है यानी वह कुछ भी सुंदर कर सकता है, वे अपने जीवन को भी सुंदर बना सकते हैं। तब पूरे विश्व उनको अपने दिलों में बिठाएंगें। अपने जीवन को संपूर्ण सशक्त बनाना हम सब का आवश्यक कर्त्तव्य है। इसीलिए विश्वकर्मा ग्रुप की सेवाएं आज की आवश्यकता है जो कारीगरों में श्रेष्ठ सृजनता का निर्माण कर संतुलित जीवन जीना सीखाती है।

●राजयोगी बीके मृत्युंजय,
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़,
माउंट आबू राजस्थान

कारीगर की आध्यात्मिक उन्नति

हमारा भारत देश सोने की चिड़िया था। जिस देश में सभी के सिर पर ताज था। आज उस विश्व को फिर से सोने की चिड़िया बनाने के लिए हम सभी को मिलकर यहां प्रयास करना होगा। जो कारीगर हैं उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए विशेष कार्यक्रम होते रहें तो जल्दी वो दिन दूर नहीं, जहां सभी सुख-शांति से संपन्न होंगे।

●राजयोगी बीके भरत,
मुख्य अभियंता, ब्रह्माकुमारीज़
माउण्ट आबू, राजस्थान

राजयोग से रचनात्मक बनें

मानवता की उन्नति के लिए भावना और कर्म का संतुलन होना अति आवश्यक है। मन के अंदर अति सुंदर विचार और बुद्धि स्वार्थ की हदों से पार हो तो हम इस दुनिया को स्वर्ग बना सकते हैं। इसके लिए जीवन में राजयोग का समावेश आवश्यक है। तभी हम रचनात्मक श्रेष्ठ कलाकार बन सकते हैं।

●राजयोगी बीके करण
भारतीय वायुसेना सेवानिवृत्त,
मोटिवेशनल स्पीकर,
ब्रह्माकुमारीज़ माउंट आबू, राजस्थान

विश्वकर्मा के निर्माण कार्य

पौराणिक कथा के अनुसार आदि काल से ही विश्वकर्मा शिल्पी अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विज्ञान के कारण ही न मात्र मानवो अपितु देव गणों द्वारा पूजित और वंदित हैं। विश्वकर्मा के अविष्कार एवं निर्माण कार्यो के संदर्भ में इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरूणपुरी, कुबेरपुरी, पाडण्वपुरी और सुदामापुरी आदि का निर्माण इनके द्वारा ही किया गया है। पुष्पक विमान का निर्माण व सभी देवों के भवन और दैनिक उपयोगी होने वाली वस्तुएं भी इनके द्वारा ही बनाया गया है। कान के कुंण्डल विष्णु का सुर्दशन चक्र शंकर का त्रिशुल और यमराज का काल दण्ड इत्यादि वस्तुओं का निर्माण विश्वकर्मा ने ही किया।

विश्वकर्मा द्वारा सृजन

ब्रह्मा ने विश्वकर्मा की उत्पत्ति करके उन्हें प्राणी मात्र का सृजन करने का वरदान दिया और उनके द्वारा 84 लाख योनियों को उत्पन्न किया। श्री विष्णु की उत्पत्ति कर उन्हें जगत में उत्पन्न सभी प्राणियों की रक्षा और भरण पोषण का कार्य सौंप दिया। प्रजा का सुचारु रूप से पालन और हुकुमत करने के लिए एक अत्यंत शक्तिशाली तीव्रगामी सुर्दशन चक्र प्रदान किया। बाद में संसार के प्रलय के लिए एक अत्यंत दयालु बाबा भोले नाथ ने श्री शंकर की उत्पत्ति की उन्हें डमरु कमण्डल त्रिशूल आदि प्रदान कर उनके ललाट पर प्रलय कारी तीसरा नेत्र भी प्रदान कर दिया और उन्हें प्रलय की शक्ति देकर शक्ति शाली बनाया। कथा अनुसार इनके साथ इनकी देवियाँ खजाने की आधिपति माँ लक्ष्मी, वीणावादिनी माँ सरस्वती और मां गौरी को देकर देवो को सुशोभित किया।

विश्वकर्मा के निर्माण कार्य का आध्यात्मिक रहस्य

इसका आध्यात्मिक रहस्य यह है कि सारे विश्व की उत्पत्ति करने वाले व सभी मानव मात्र की उत्पत्ति करने वाले व जितने भी जीव है सभी की रचना स्वंय हमारे निराकार परमात्मा शिव बाबा ने की है वो सारे संसार के कर्ता-धर्ता हैं। उन्हें ही भक्ति मार्ग में विश्वकर्मा के नाम से जाना जाता है। शिव बाबा एक साधारण मनुष्य के तन में प्रवेश करते हैं और उनका नाम ब्रह्मा रखते हैं और ब्रह्मा के द्वारा ही ब्राह्मण रचे जाते हैं। फिर ब्राह्मण ही देवी-देवता बनते हैं और ब्रह्मा ही विष्णु बनते हैं। इस कलयुग और सतयुग के संगम पर ही सारे शस्त्र मिलते हैं लेकिन वो ज्ञान के आधार पर जैसे ज्ञान का शंख, ज्ञान का तीसरा नेत्र, सुदर्शन चक्र मतलब स्वयं का दर्शन और चारो युगों का दर्शन और शिव बाबा के पास जो भी था सब ब्रह्मा बाबा को दिया। ब्रह्मा बाबा के द्वारा हम बच्चों को मिला और ब्रह्मा के साथ मम्मा को दिखाया है जो जगदम्बा सरस्वती है उन्हें भक्ति मार्ग में अनेक नामों से पुकारते हैं। तैतीस कोटी देवी देवताओं की जो महिमा गायी जाती है वो हम सब बच्चे ही अपने पुरुषार्थ के द्वारा बनते हैं। सारे विश्व के सृजन करने वाले व भरण पोषण करने वाले एक शिव बाबा ही है जो ब्रह्मा बाबा को निमित्त बनाकर उनके द्वारा सारा कार्य करवाते हैं। शिव बाबा ही विश्वकर्मा है यानि सारे संसार को चलाने वाले एक शिव बाबा ही है जिन्हें विश्वकर्मा नाम से पुकारते है और पूजा भी करते है।

❝ राजयोग के प्रयोग द्वारा व्यसन और डिप्रेशन मुक्त होकर बनें सुखमय संसार का रचनाकार विश्वकर्मा ❞
कीर्तिराज, विश्वकर्मा ग्रुप, ब्रह्माकुमारीज़

सुखद विश्व का निर्माण का कार्य हमारे कर्मों के आधार पर होना है

हम सभी वर्षों से आध्यात्मिक ज्ञान और श्रेष्ठ विचारों को सुनते हैं श्रेष्ठ विचारों पर चिंतन मनन भी करते हैं। कई स्थानों पर श्रेष्ठ विचारों को लिखते भी है लेकिन जब तक उनसे विचारों को कर्म में नहीं लाते हैं तब तक इन विचारों का प्रभाव विश्व पर नहीं पढ़ सकता। आपके कर्म ही आपकी पहचान है, आपके मन और बुद्धि में शांति प्रेम या आनंद जैसे आत्मिक गुण होंगे तो आपके कर्म से प्रेरणा लेकर श्रेष्ठ कर्म कर लोग महानता के शिखर पर पहुंच पाएंगे।

नए विश्व का निर्माण का आधार आध्यात्मिकता

वर्तमान समय हर एक मनुष्य समस्या से घिरा हुआ है। आज विज्ञान की सत्ता, राज सत्ता अनेक धर्म सत्ता अपना-अपना कार्य कर रही है फिर भी मनुष्य के जीवन में संतुलन नहीं है इससे सीधे कि अवश्य कोई अन्य सत्ता की आवश्यकता है जिसका वर्तमान जीवन में अभाव है वह है आध्यात्मिक शक्ति की सत्ता जिससे ही आंतरिक परमात्मा शक्तियां प्राप्त कर अपनी सूक्ष्म कर्म इंद्रियां, मन और बुद्धि को एकाग्र कर तनाव मुक्त जीवन का अनुभव कर सकेंगे। आध्यात्मिक शक्ति द्वारा मनुष्य स्वयं में देवत्व का निर्माण कर सकता है। आध्यात्मिक शक्ति द्वारा ही स्वयं का परिवर्तन सुख शांति व प्रेम मई जीवन बना सकते है, आध्यात्मिकता द्वारा ही तनाव मुक्त होकर संतुष्टता का जीवन हम जी सकते हैं।

विश्वकर्मा ग्रुप से संबंधित विषय शीर्षक

- योग द्वारा कर्म में कुशलता
- श्रेष्ठ विचार से श्रेष्ठ निर्माण
- आध्यात्मिकता द्वारा कार्य में श्रेष्ठता
- जीवन जीने की कला-राजयोग
- कारीगरों का पुनरूउत्थान
- राजयोग द्वारा कर्म में कुशलता
- वास्तुकारों का सशक्तिकरण
- मेरे भाग्य मेरी मुट्ठी में
- मूल्यनिष्ठ कारीगरों की पहचान
- श्रम ही जीवन का आधार
- प्रगति का आधार आध्यात्मिकता
- आध्यात्मिकता द्वारा विश्व निर्माण
- व्यसनमुक्त एवं तनावमुक्त
- मानसिक रूप से स्वस्थ बनना
- शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा
- स्वस्थ जीवन का आधार पवित्रता
- समय का पाबंद होना
- सबेरे उठ दिनचर्या से चलना

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▸ ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▸ 9414172596, 9413384884, 9179018078
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
▸ bkkomal@gmail.com

● प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. कार्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539